आज ७५ वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने के बाद भी चौधरी साहब का ओजस्वी व्यक्तित्व राजनीतिक वातावरण में प्रेरणा और उत्साह भर रहा है, उनमें जन-सेवा की अपार शक्ति है। हमारी कामना है कि चौधरी साहब देश और नागरिकों की सेवा के लिए हमारे बीच दीर्घकाल तक विद्यमान रहें, जिससे देश के बड़े-बड़े कामों में उनका परामर्श, निर्देश और नेतृत्व प्राप्त होता रहे।

●

रामराज्य

दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा ॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती ॥
चारिउ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहुं अघ नाहीं ॥
राम भगति रत नर अरु नारी। सकल परम गति के अधिकारी ॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुन्दर सब बिरुज सरीरा ॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना ॥
सब निर्दंभ धर्मरत पुनी। नर अरु नारि चतुर सब गुनी ॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी ॥

दो०—राम राज नभगेस सुनु सचराचर जग माहिं।
काल कर्म सुभाव गुन कृत दुख काहुहि नाहिं ॥

—रामचरित मानस

●

लौह-पुरुष

● नरसिंह यादव

केन्द्रीय राज्य मन्त्री, विधि और न्याय

स्वदेशी व राष्ट्रवाद के प्रखर प्रवक्ता चौधरी चरणसिंह की चारित्रिक विशेषताओं के संयुक्त सूत्रों के समीकरण को 'एक संघर्षशील व्यक्तित्व' की संज्ञा प्रदान हम कर सकते हैं। सात दशकों में फैला हुआ उनका अब तक का सारा जीवन सतत् संघर्ष की महान गाथा है। आप परिस्थितियों की ऐसी विपरीत धारा के विपरीत लगातार तैरते रहे हैं, जो कभी-कभी दुष्टतापूर्ण और अक्सर हिंसक हो जाती थी। उत्तर प्रदेश में मेरठ जिले के एक छोटे से गाँव 'नूरपुर' में २३ दिसम्बर सन् १९०२ को जब उनका जन्म हुआ तब कौन कह सकता था कि भारतीय राजनीति में वे इतनी महत्व-पूर्ण भूमिका अदा करेंगे। किन्तु नूरपुर से रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली की यात्रा, त्याग, लगन और संघर्ष की लम्बी कहानी है। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जिन लोगों ने अपने कंधों पर तिरंगा उठाया था, उन्होंने अपना वर्तमान भविष्य स्वतंत्रता की बलि-वेदी पर अर्पित कर दिया था। श्री चरणसिंह इन्हीं सेनानियों में से थे। महात्मा गांधी के नेतृत्व में आप 'साइमन कमीशन' के बहिष्कार के समय से नमक सत्याग्रह और सिविल नाफर्मानी आन्दोलनों से गुज-रते हुए ब्रिटिश राज्य के गढ़ पर सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के रूप में अन्तिम प्रहार तक स्वतन्त्रता संग्राम में जूझते रहे।

ऐसे संघर्षशील राजनीतिक जीवन से खिंच कर विधान मण्डल का अपेक्षाकृत शांत वातावरण भी आपके संघर्षमय जीवन में कोई शांति न ला सका। चाहे आप विधान मण्डल के गैर-सरकारी सदस्य (सन्१९३७–३९ तक) रहे हों और चाहे स्व० पं० गोविन्द वल्लभ पंत के नेतृत्व में संसदीय सचिव (सन् १९४६–५१ तक) अथवा मंत्रिमण्डलीय स्तर के मन्त्री, आप अनवरत् गरीबों व किसानों के हितों की रक्षा और उनके उत्थान के लिये अथक कार्य करते रहे।

राजनीति के रंगमंच पर दो ही किस्म के व्यक्ति होते हैं, एक बड़ा वर्ग धारा के साथ बहने वालों का, दूसरा, धारा को प्रतिधारा में परिवर्तित कर उसके विपरीत चलने वालों का। संघर्ष-पसन्द चौधरी साहब दूसरे पथ के पथिक रहे हैं। सचिव से लेकर मुख्यमन्त्री पद पर रहते हुए भी आप सत्ता से सदैव निर्लिप्त रहे। अपनी उन मान्यताओं के लिये जो भारतीय इतिहास के गूढ़ अध्ययन के बाद बनीं, उनके लिए आपने सतत संघर्ष का रास्ता अपनाया। कभी भी परिणाम को नहीं सोचा। नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में अपनी स्पष्टवादिता का परिणाम आपको भोगना पड़ा। आप राजनीति की चालों में न यकीन ही रखते हैं और न भरोसा। यदि वे किसी प्रस्ताव से सहमत नहीं होते हैं तो चाहे वह प्रस्ताव राजनीतिक दृष्टि से कितना ही लाभप्रद क्यों न हो, वे अपनी राय स्पष्ट रूप से तथा जोरदार तरीके से व्यक्त करते हैं।

सन् १९२३ में आगरा विश्वविद्यालय से बी.एस-सी., सन् १९२५ में एम. ए. तदुपरान्त कानून की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् गाजियाबाद में आपने वकालत शुरू की। चौधरी साहब ने वकालत छोड़ कर पूरी तरह अपने को स्वाधीनता आन्दोलन में समर्पित कर दिया।

चौधरी साहब सर्वप्रथम सन् १९३७ में छपरौली (मेरठ) निर्वाचन क्षेत्र से विधान सभा के लिये चुने गये। सन् १९४६ में वे पं० गोविन्द वल्लभ पन्त की सरकार में संसदीय सचिव बनाये गये। सन् १९४८ से सन् १९५६ तक वे राज्य विधान मण्डलीय दल के सचिव रहे। पहली बार जून सन् १९५१ में उन्हें मन्त्रिमण्डल में शामिल किया गया। वे डा० सम्पूर्णानन्द के मन्त्रिमण्डल में कृषि और राजस्व मन्त्री रहे।

चौधरी साहब प्रारम्भ से ही निर्भीक व स्पष्टवादी रहे हैं। डा० सम्पूर्णानन्द जी के कतिपय विचारों से उनका मतभेद हो गया तो उन्होंने मन्त्रिमण्डल से अलग हो जाना उचित समझा तथा त्याग-पत्र देने में उन्हें तनिक भी हिच-किचाहट नहीं हुई, न देरी ही लगी। सन् १९६० में वे श्री चन्द्रभानु गुप्त के मन्त्रिमण्डल में गृह तथा कृषि मन्त्री थे।

श्री चरणसिंह सफलतापूर्वक, उत्तर प्रदेश में कृषि, राजस्व, सिंचाई तथा बिजली, गृह वन तथा स्थानीय शासन मन्त्री रहे। कोई भी व्यक्ति जो उत्तर प्रदेश में कैबिनेट मंत्री के रूप में श्री चरणसिंह के जीवन के राजनीतिक उतार-चढ़ाव के बारे में जानना चाहता है, उसे यह मालूम हो जायेगा कि किसान की दशा सुधारने के उनके अनेक प्रयत्नों का विरोध प्राय: उन्हीं के द्वारा किया गया जो गरीब व दलित लोगों के कल्याण के लिए अपने मन में गहरी चिन्ता रखने का ऊँचे स्वर से दावा करते थे। राज-नीतिक आलोचना करने की प्रवृत्ति की भी कोई सीमा न रही और श्री चरणसिंह जैसे नेताओं के प्रयासों को निष्फल बनाने के लिये कुछ भी अनैतिक अथवा बुरा नहीं समझा गया।

परन्तु आजीवन संघर्ष से जूझते रहने के कारण उनके अन्दर महान् शक्ति थी, इसलिये वे घबराये नहीं। उनके कार्यों का प्रयोजन स्पष्ट था जिनमें बहुत से नये तथा मिसाल कायम करने वाले कार्य थे। वन विकास में सुधार करना, ग्रामीण-ऋणग्रस्तता के बोझ को कम करना, पट्टेदारी प्रथा से उत्पन्न असमानता तथा अन्याय को दूर करना और अन्त में जमीदारी उन्मूलन अधिनियम के जरिये किसान को बिचौलियों तथा जमीदारों पर निर्भर करने की व्यवस्था से मुक्ति प्राप्त कराना प्रमुख थे।

चौधरी साहब की स्वतन्त्र चेतना व निर्भीकता सर्व-विदित है। एक ओर जहाँ दिग्गज माने जाने वाले लोग कांग्रेस की वर्तमान नीतियों से असहमत होते हुए भी उससे अपने राजनीतिक अस्तित्व के रक्षार्थ चिपके हुए थे, वहाँ चौधरी साहब ने अपने अद्‌भुत राजनीतिक शौर्य का प्रदर्शन करते हुए, कांग्रेस का परित्याग ही नहीं किया वरन् भारतीय क्रांतिदल नाम की नई राजनीतिक संस्था का गठन करके उत्तर प्रदेश में जनता के सम्मुख कांग्रेस का एक ठोस विकल्प भी प्रस्तुत किया। जनता को यह स्पष्ट आभास हो गया कि कांग्रेस की अभिजात्य वर्गीय हुकूमत और अंधेरगर्दी से उबारने के लिये चौधरी साहब की निश्छल ईमानदारी और रहनुमाई के अलावा और कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने कांग्रेस को उसके गढ़ उत्तर प्रदेश में चुनौती दी और यह सिद्ध कर दिया कि कांग्रेस को चुनौती दी जा सकती है और उसे सफलतापूर्वक हराया भी जा सकता है। तब से ही चौधरी साहब ने पूरे देश में कांग्रेस का विकल्प संगठित करने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान आरम्भ कर दिया था।

केन्द्र में कांग्रेस के लगातार पतन से श्री चरणसिंह जी को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। वे इसे न केवल अवश्यम्भावी मानते थे बल्कि इस राष्ट्रीय संगठन के पतन से लोगों को लगातार सचेत करते रहते थे।

उन्होंने इस सम्भाव्य घटना से निपटने के लिये अपनी तरह से तैयारियाँ कीं। उन्होंने अपनी पार्टी का विलय डा० राममनोहर लोहिया की प्रेरणा से बनी संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, उड़ीसा के बीजू पटनायक द्वारा गठित उत्कल कांग्रेस और राजाजी द्वारा संगठित स्वतन्त्र पार्टी में करके उसके आधार क्षेत्र को और भी विस्तृत किया।

भारतीय लोक दल राष्ट्रीय चित्रपट पर कांग्रेस के सम्भावित विकल्प के रूप में उभर कर सामने आया। इस समय तक, श्री जयप्रकाश के आन्दोलन ने इसे प्रमुख राज-नीतिक शक्ति बनाया जो कांग्रेस के विकल्प का द्योतक थी। और इस कारण आपात स्थिति का जन्म हुआ।

जब देश के गैर-कांग्रेसी नेता १९ महीनों तक जेल में बन्द कर दिये गये थे; वह अवधि श्री चरणसिंह जी के संघर्ष

की दूसरी अवधि थी। उन्होंने प्रत्येक प्रतिष्ठित गैर-कांग्रेसी नेता से सम्पर्क किया और एक संगठित राष्ट्रीय पार्टी के गठन की आवश्यकता पर बातचीत की जो केन्द्र में कांग्रेस को अपदस्थ कर सके। श्री चरणसिंह तब भी हतोत्साहित नहीं हुये जब श्री जयप्रकाश नारायण जो उनके तर्कों से तो सहमत थे, ने कहा कि सभी राजनीतिक पार्टियों के एक सम्मिलित मोर्चे के बारे में तो वे सोच सकते हैं, परन्तु एक संगठित पार्टी के गठन के बारे में आश्वस्त नहीं हैं।

जनवरी सन् १९७७ में श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा नया जनमत प्राप्त करने का अचानक अव्यक्त निर्णय लिए जाने के फलस्वरूप सभी राजनीतिक नेताओं की रिहाई ने, जिनको आगामी चुनाव की तैय्यारी के लिए न के बराबर बहुत थोड़ा समय दिया गया था. उत्प्रेरक का कार्य किया। जिससे श्री चरणसिंह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल हो सके।

अन्ततोगत्वा कांग्रेस संगठन, जनसंघ तथा समाजवादी पार्टी के नेताओं, श्री चन्द्रशेखर, श्री मोहन धारिया व श्री कृष्णकान्त जैसे विचारकों ने मार्च के चुनाव में श्रीमती इन्दिरा गांधी और उनकी कांग्रेस से टक्कर लेने के लिये एक झंडे, एक चिह्न तथा एक घोषणा-पत्र के साथ एक संगठित पार्टी बनाने सम्बन्धी श्री चरणसिंह की योजना का स्वागत किया और अपनाने के लिये आगे आये। जनता पार्टी का जन्म हुआ और श्री चरणसिंह जी के प्रयास सफल हुये।

चौधरी साहब के अत्यधिक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और चालू अर्थव्यवस्था की समस्याओं का गहन अध्ययन करने की योग्यता ने उनकी इस बात की पुष्टि कर दी कि जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में देश के लिये जो योजना-नीति स्वीकार की गयी है, न केवल गलत है बल्कि अन्याय पूर्ण भी है। इन सभी अवधियों के दौरान उन्होंने दृढ़ता के साथ महात्मा गाँधी से प्रेरणा प्राप्त करके एक वैकल्पिक नीति अपनाई जिसमें देश के सामने कठिन आर्थिक समस्याओं के निदान की व्यवस्था थी।

महात्मा गाँधी की भाँति गाँवों की खुशहाली के रहनुमा हमारे गृह मंत्री चौधरी साहब का दृढ़ विश्वास है कि गाँवों के विकास के बिना देश का विकास नहीं हो सकता। उनकी मान्यता है और समय की कसौटी पर वह खरी भी उतरी है कि गांवों के विकास के लिए अधिकारतन्त्र गाँवों के निवासियों के हाथ में होना आवश्यक है, क्योकि शहरी वर्गों से उभरे देश के नेतृत्व को देश की अस्सी प्रतिशत ग्रामीण जनता की परिस्थितियों की न तो सही अनुभूति होती है और न उनमें वह संवेदनशीलता पाई जाती है, जो गाँवों के किसानों, मजदूरों, कारीगरों और गरीब बेसहारा लोगों के हृदय को छू सके।

चौधरी साहब का बहुत पहले से ही यह विचार था कि देश की श्रम शक्ति का सदुपयोग ही हमारी समस्याओं का एकमात्र हल है। हमारे यहाँ रूस और अमेरिका के विपरीत जहाँ प्राकृतिक साधनों की प्रचुरता और श्रम शक्ति की कमी है, भूमि कम और जनसंख्या अधिक है। हमें अपने यहाँ खेती और उद्योग दोनों क्षेत्रों में ऐसी तकनीक अपनानी होगी, जिससे भूमि की प्रति एकड़ पैदावार बढ़े और उद्योगों में प्रति इकाई अधिक रोजगार मिले। खेतों में बड़े फार्मों के, चाहे वह सहकारी, सरकारी या निजी हों, विरोधी हैं। उनके विचार में भूमि का अधिकतम उपयोग करने के लिये उसकी अधिकतम और न्यूनतम सीमा निर्धारित होनी चाहिए। ऐसे ही उद्योगों के क्षेत्र में उनकी स्पष्ट मान्यता है कि उपयोग की अधिकांश वस्तुओं का उत्पादन ग्रामीण एवं कुटीर उद्योगों द्वारा किये जाने से ग्रामीण दस्तकारों की आर्थिक दशा में सुधार होगा। जो वस्तुयें इनमें न बन सकें उन्हें लघु उद्योगों द्वारा तथा जो उनमें भी न बनाई जा सकें, उसे बड़े उद्योगों द्वारा तैय्यार कराया जाय।

चौधरी साहब की सामान्य सामाजिक मान्यता शुद्ध भारतीय सामाजिक परम्परा के अनुकूल है। उन्हें जाति-पाँति, ऊँच-नीच, अमीर-गरीब आदि भेद-भाव की ऊँचाइयाँ बाँध नहीं सकतीं। महर्षि दयानन्द के उद्बोधनों से प्रेरित यह सच्चा भारतीय भाग्यवाद, कर्मफल व जन्म के आधार पर जाति-पाँति की कुप्रथा को समाप्त करने के लिए सदैव तैयार रहा है और इस दिशा में निरन्तर अथक प्रयास करता रहा है और आज भी सतत प्रयत्नशील है।

विश्व के प्रसिद्ध प्रशासकों की श्रेणी में चौधरी साहब

की गणना किया जाना उचित ही है, क्योंकि प्रशासक के सारे गुण उनमें अपनी चरम सीमा में हैं। प्रशान्त धीर स्वभाव, मितभाषिता, समय पर समुचित सावधानी के साथ प्रशासनिक कदम चौधरी साहब की अपनी विशेषता है जो भारत के बहुत कम प्रशासकों में पाई जाती है। श्री चरण सिंह की बौद्धिक विचारधारा में जो दूसरा दृढ़ सिद्धान्त हमेशा कायम रहता है और जिसे उनके परम शत्रु भी स्वीकार करते हैं, वह है उनकी अडिग ईमानदारी। श्री चरणसिंह किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार के घोर शत्रु हैं। वे ईमानदार, निष्कपट और स्पष्टवादी हैं।

इस प्रकार श्री चरणसिंह संघर्षमय जीवन को ही सार्थक मानते हैं, अन्यथा उसका कोई अस्तित्व नहीं समझते हैं। वे हमेशा संघर्षशील रहते हैं और उनका संघर्ष अब भी जारी है। उनकी प्रत्येक सफलता उनके लिए अगले संघर्ष की भूमिका होती है। उनको तब तक चैन नहीं होगा, जब तक वे अपने राजनीतिक गुरु महात्मा गाँधी की उक्ति के अनुसार 'लोगों की आँखों में आँसू हैं, जिन्हें पोंछना है' को साकार न कर लें। उनके जीवन में केवल एक ही महत्वाकांक्षा है। परन्तु उस महत्वाकांक्षा का स्वरूप ऐसा है, कि वह स्वयं अपने आप भी यह दावा नहीं कर सकते कि उन्होंने इसे प्राप्त कर लिया है।

इसे महात्मा गाँधी ने निम्नलिखित शब्दों में प्रभावी ढंग से इस प्रकार कहा है :-

"मैं आपको एक तावीज दूंगा। जब आपको सन्देह हो या जब आपको अपने आप पर गरूर होता हो, परीक्षण के बाद इसका प्रयोग करें। सबसे अधिक गरीब और कमजोर उस व्यक्ति के चेहरे को याद करें, जिसे आपने देखा हो और अपने आप से पूछिये, यदि जो काम आप करने का विचार कर रहे हैं, वह काम, उस व्यक्ति के किसी लाभ का है या उससे उसका कुछ भला होगा? क्या इससे उसे अपने जीवन और भविष्य में सुव्यवस्था मिल सकेगी? दूसरे शब्दों में, क्या इससे लाखों भूखे और आध्यात्मिक रूप से अतृप्त लोगों को स्वराज मिलेगा? तब आपको अपनी शंकाओं का पता चलेगा और आपका गरूर समाप्त होगा।"

यदि श्री चरणसिंह जी आज भी संघर्षशील कर्मयोगी हैं तो यह इसलिये हैं कि वे प्रतिक्षण गाँधी जी द्वारा निर्धारित इस तावीज को निरन्तर अपने मानसिक चक्षुओं के आगे रखे हुये हैं।

२३ दिसम्बर सन् १९७७ के किसान-दिवस के अवसर पर भारत के लोगों ने उन्हें अनेक नामों से सम्बोधित किया है, पर मेरी दृष्टि में वह वर्तमान भारत के लौह-पुरुष हैं। परमात्मा इन्हें दीर्घजीवी बनाए, जिससे गरीबों, शोषितों व पीड़ितों को बराबर मार्ग दर्शन मिलता रहे।

●

'प्रत्येक विशिष्ट प्रतिभा को ईर्ष्यारूपी दण्ड भोगना पड़ता है।'

-एमर्सन

कृषकों के हृदय-सम्राट

□ जगदम्बी प्रसाद यादव
राज्य मन्त्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण भारत सरकार

सरदार पटेल के बाद इस देश को उनके सदृश महा-पुरुष के रूप में चौधरी चरणसिंह जी ही गृह मंत्री प्राप्त हुए।

मुझे स्मरण है कि जब स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू सहकारिता खेती का प्रस्ताव कांग्रेस में पारित करा रहे थे, उस समय एकमात्र उसका दृढ़तापूर्वक विरोध करने वाले चौधरी साहब ही थे। जिन्होंने जोरदार शब्दों में कहा था कि खेती की बात–खेती का प्रस्ताव वह आदमी उपस्थित कर रहा है जिसके वंश में किसी ने खेती नहीं की और जिसके पैर जमीन पर नहीं आसमान पर हैं। यह सहकारिता खेती नहीं चलने वाली है, प्रस्ताव पारित भले ही हो।" नेहरू जी प्रस्ताव पारित कराने में अपने प्रभाववश सफल हुए, लेकिन अन्त में चौधरी साहब की ही बात सत्य हुई। सहकारिता खेती का कार्यान्वियन बड़ा असफल रहा और आज उसको लोग भूल भी चुके हैं। आज भले कोई किसी का विरोध कर ले लेकिन उस समय नेहरू जी का विरोध करना स्वयं में एक हस्ती की बात थी।

चौधरी साहब भारत के कृषकों के हृदय सम्राट हैं। किसान उनको अपना नेता मानते हैं। इसीलिए आज भी वे लोग इनकी ओर टकटकी लगाकर देखते रहते हैं। चौधरी साहब भारत, जो किसानों का देश है, जिसकी आत्मा गाँव है, उसके सफल चिन्तक हैं और उसके लिए व्यावहारिक कार्यक्रम निर्धारित करने में भी सक्षम हैं। जनता पार्टी भारत सरकार के बजट का एक तिहाई और आगे चलकर ४० प्रतिशत भाग किसानों और ग्रामों के विकास में लगायेगी, इसका मूल मंत्र देने वाला यही वह व्यक्ति है और यही वास्तव में ठीक भी है। अगर ८० प्रतिशत आबादी जो गाँवों में बसती है, उसका विकास नहीं हुआ तो देश का विकास कभी सम्भव नहीं है। ३० वर्ष की आजादी के बाद भी आज गाँव उपेक्षित हैं। यह पहली बार है जब कि गाँव और कृषि के विकास के लिए बजट का ४० प्रतिशत तय किया गया है। उससे ऐसा लगता है कि गाँवों में सिंचाई, खेती के साथ कृषि की पैदावार बढ़ेगी। सड़कों, बिजली और शिक्षण संस्थाओं के उन्नयन से गाँव की शक्ल बदलेगी तथा कृषि के आधार पर उद्योगों का भी विकास होगा। इस विकास में बेकारी का समाधान निहित है और भारतवर्ष की समृद्धि भी।

चौधरी साहब का रहन-सहन सीधा है। विचार सरल, पर सच्चाई और आचरण में कट्टरता को लिए हुए हैं। वह गलत भ्रष्ट, काम कोई भी क्यों न करे, वे उसे माफ नहीं करते, चाहे वह उनका निजी आदमी हो अथवा बड़ा प्रभाव-शाली व्यक्ति। वे निस्पृह होकर उस पर कार्यवाही करने में समर्थ हैं। यह बात जगत-विख्यात है।

चौधरी साहब एक सफल राजनीतिज्ञ ही नहीं बल्कि एक संगठनकर्त्ता भी हैं। इसका परिचय उन्होंने अपने अकेले बल पर संगठन का निर्माण करके दिया है और आज भी जनता पार्टी के गठन में आपका बहुत बड़ा योगदान रहा है।

चौधरी चरणसिंह के श्री चरणों में अपनी अगाध श्रद्धा के फूल अर्पित करना मेरे लिए परम सौभाग्य की बात है। वे भारतमाता के उन गिने चुने सपूतों में एक हैं जिन्होंने अपनी दृढ़ता, विद्वत्ता, निर्भीकता ओर दूरदर्शिता से देश की गरिमा को चार चाँद ही नहीं लगाए, बल्कि राजनीति को एक नई दिशा दी है। देश में जो जनक्रान्ति हुई और जिसने हमें एक निरंकुश तानाशाही के चंगुल से मुक्त कराया, वह इस जन-नायक के सतत् एवं कर्मठ नेतृत्व के बिना शायद संभव नहीं हो पाती। अतः इस बात में रंचक भी संशय नहीं कि भारत जननी इस सपूत को जन्म और आयु दोनों देकर सनाथ हुई है। अपने जीवन का सब कुछ बलिदान देकर इस हुतात्मा ने देश और व्यक्ति की स्वतन्त्रता के महान यज्ञ में जो आहुति डाली है, उससे भारत के स्वर्णिम इतिहास में उनका स्थान 'यावच्चंद्रदिवाकरौ' अक्षुण्ण रहेगा।

पर चौधरी साहब ने अपने गूढ़ कर्त्तव्यों को सदैव अतीव नम्रता से वहन किया है। आज वे ३० वर्षों के अनवरत संघर्ष के बाद देश के गरीबों और दलितों को सम्मान जनक जीवन दिलाने के जिस महत्तम कार्य में प्राणपन से जुटे हुए हैं और जिस अपार धैर्य से अपने एवं देश के शत्रुओं से जूझ रहे हैं, वह देश एवं मानवजाति के इतिहास में उनको अमर कर देगा। वे देश को एक नया समाज देना चाहते हैं जिसका संस्कार होने के उपरांत उसमें ऊँच-नीच जाति-पाँति और छुआछूत हमेशा के लिए मिट जायेगी। वे हमारे मनीषी ही नहीं दधीचि भी हैं। भगवान करे कि इस काम को सम्पन्न करने का श्रेय भी उन्हें ही मिले।

अन्त में मैं सर्वशक्तिमान भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि वे निरोग रहें और शतायु हों ताकि वे देश के पुनर्निर्माण में विधाता के सबसे बड़े साधन बन सकें।

●

दण्डविष्टिकराबाधैः रशेदुपहतां कृषिम्।
स्तेनव्यालविषग्राहैः व्याधिभिश्च पशुव्रजान्॥

—चाणक्य

दण्ड, विष्टि (बेगार), कर (टैक्स) आदि की बाधा से नष्ट होने वाली कृषि की राजा सर्वदा रक्षा करे, अर्थात् किसानों पर अधिक भार न डाले। इसी प्रकार चोर, हिंस्र प्राणी, विष-प्रयोग तथा अन्य प्रकार की व्याधियों से किसानों के पशुओं की रक्षा करना भी राजा का कर्तव्य है।

●

दिल्ली में देहात का खामोश कदम

□ श्यामनन्दनमिश्र,
उपनेता, जनता संसदीय दल

खाने की मेज पर सूखी चपाती, लेकिन तुरत-तुरत तवे से आयी हुई, दाल गाढ़ी और स्वादिष्ट, एक सब्जी ज्यादातर, और दो कभी-कभी, साथ-साथ प्याज और अदरख के कतरे, सम्भवतः दही भी और आखिर में कभी-कभी खोये की बर्फी या छोटे-छोटे सफेद-सफेद बताशे के साथ दूध का एक प्याला। यही हर दिन, चाहे अपने परिवार के लोग हों या आमंत्रित उच्च-पदस्थ अतिथि।

और पोशाक में, गर्मियों में खादी की एक मोटी धोती के ऊपर एक मोटा उजला कुर्ता, जाड़े में चुस्त पायजामा के ऊपर शेरवानी, मामूली ऊनी कपड़े की। गाँधी टोपी, साधारणतया सफेद, कुर्ता और धोती उससे कुछ कम। एक मामूली हिन्दुस्तान मशीन टूल की घड़ी काले रंग के केस में काले फीते के साथ– किसी सम्बन्धी ने लाकर दी तो एक लड़के की तरह इस शौक से लगाया कि जैसे कोई निहायत कीमती और खूबसूरत चीज मिल गई हो और यह दिल्ली के उस माहौल में जहाँ रोलेक्स जैसी हजारों रुपये की घड़ियाँ भी मंजूरेनजर नहीं।

बंगला तो मिनिस्टर का है लेकिन जब तक बेटियों की साज-सज्जा का शिकार न हुआ और ग्रामीण संस्कृति पर थोड़ी शहरी मुलम्मासाजी नहीं हुई थी, तब तक एक एम० पी० के बंगले को दुगुना कर लीजिए, बस यही नजारा है। जिस दिन दूरदर्शन महीनों की रस्साकशी के बाद घर में आया तो वातावरण एक महाव्रत टूटने का था। ज्यादातर परिवार के लोगों में हल्की खुशी थी मगर परिवार के मुखिया के चेहरे पर मायूसी।

और घर में किसी बेटी की शादी हो तो थोड़ी सी बिजली की सजावट, पौधों पर और मकान पर, १५-२० मेहमान, आर्यसमाज की पद्धति से संक्षिप्त रूप में कन्यादान और सारा समारोह ३ घन्टे के अन्दर सम्पन्न।

मिलने वालों की तादाद हर दिन बेशुमार, लेकिन उनसे मिलने का अन्दाज तो देखिए, मिलेंगे भी और झिड़केंगे भी। कभी कोई किसी कदर मिलने में नाकामयाब रहा और वापिस चला गया लेकिन वह पुराना कार्यकर्ता या गांव का पुराना प्रतिष्ठित किसान है, तो बहुत-बहुत अफसोस करना। बड़े-बड़े पूँजीपति हफ्तों कोशिश करें और खुश किस्मती समझिये कि मिल पाये। शाम का वह वक्त कितना दिलचस्प होता है जब एक निजी सचिव मिलने वालों की लिस्ट लेकर आता है और पहले यह सुनता है कि "देखते नहीं कितने काम हैं, इतने लोगों से मुलाकात करूं तो काम कैसे होगा" और फिर बाद में उसके इसरार पर एक के बाद दूसरे नाम पर ठीक से गौर करना और छांटते जाना, फिर कहीं-कहीं पर रुकना, तब जाकर बड़ी झिझक और झल्लाहट के बाद दूसरे दिन के मिलने वालों की लिस्ट तैयार होती है।

मगर उस झिड़की से क्या हुआ करता है कि लोग उसके बावजूद फिर-फिर मिलने आते हैं, छोड़ते नहीं, चिपके रहते हैं, गोंद की तरह ? हम और आप उस तरह लोगों को डाँटे-डपटें तो क्या कयामत आयेगी, खुदा भला करे।

मगर इतना तो कहना ही पड़ता है कि यह शख्स कभी अपनी आवाज ऊँची नहीं करता, अगर आप कुछ कान के ऊँचे हैं तो उसे पूरी तरह पकड़ भी नहीं सकते। मुस्कराहट इसके होठों से बराबर चिपटी रहती है और हुस्नेबयानी तो देखिए कि जब कभी नाराज हों तो अपने विरोधी को कहते हैं 'आप कामयाब हो गए, मुझे नाराज कर दिया।" गलती हुई तो छोटे-से-छोटे से भी माफी माँगने में कोई हिचकिचाहट नहीं।

संसद में भी जब बातें करना तो ऐसी सहजता से कि लगता है कि संसदीय शिष्टता जैसे स्वभाव का अंग बन गई हो। जबान से रवानी भी और मानी भी, तंज भी और मिठास भी– लेकिन सबसे ज्यादा एक खास तरह का लहजा और लय जिससे दलील का उतार-चढ़ाव तो जाहिर होता ही है साथ-साथ उसकोआगे बढ़ाने में भी मदद मिलती है। उनकी यह उक्ति बहुत-कुछ प्रसिद्ध हो गई है कि किसी को अपनी बात निर्बाध रूप से कहने का अधिकार है, चाहे आप उसे कितना ही गलत क्यों न माने, नहीं तो मजलिस दरहम दरहम हो जायेगी। कभी तीर भी चलाना तो इस तरह कि बेकार न जाए। "धनुष्यमोघ सपद्यत्त बाणम्।"

लेकिन इन चीजों से क्या आपको ये ख्याल हुआ कि यह व्यक्ति वैसा ही रूखा-सूखा है जैसा इसका खाना या जैसी इसकी लिबास या जैसा इसका सहन-सहन। कतई नहीं। हँसी-मजाक का पुट तो प्रायः प्रत्येक वाक्य या लहजे में मिलेगा, और दूसरों को ऐसी ही बातों पर खुली हँसी के साथ दाद देने में भी कोताही नहीं। ज्यादातर खुलुस से ही बातें करेंगे, नहीं नो बिलकुल औपचारिक तौर पर बातें करके कतरा जायेंगे, जिनसे दिल नहीं खोल सकते। जिस बात का विचार पक्का हो गया उसको दृढ़ता से कह भी देते हैं– विशेष रूप से जहाँ सरकारी कर्तव्य पालन का अवसर आता है। रात में परिवार के लोगों के साथ विनोद पूर्ण ढंग से ताश का खेल भी चला करता है जिसका सिलसिला किसी मित्र के आने पर सहसा तोड़ देने में भी कोई मोह नहीं।

राजनीतिक जीवन में ज्यादातर लोग पारिवारिक जीव नहीं रह पाते, सबों के स्नेह से सिंचित रहते हुए भी उनका ख्याल बहुत कम कर पाते। यह एक अर्थ में अत्यन्त संकुचित स्वार्थपरता है। लेकिन इनको देखिए तो मालूम होगा कि कहां से मरूभूमि में एक सोता मिल गया। ऐसे आदर्श पारिवारिक व्यक्ति राजनीतिक जीवन में कम मिलेंगे। परिवार के लोगों के बीच इनकी अवर्णनीय प्रसन्न मुद्रा से आपको अपने जीवन की कमियां बड़ी तीव्रता से महसूस होने लगेंगी। एक बार तो अपने एक निकटतम मित्र के पुत्र को उनके सामने यहाँ तक कह दिया कि "ये तुम्हारी माँ को यहाँ नहीं रखते, अब से उसको बुलाने खुद ही तुम्हारे गाँव जाऊँगा।" पत्नी के साथ पूर्णता की जैसी छवि छिटकती है उसे देखते ही बनता है और जो स्नेह का पवित्र वातावरण पैदा होता है उसकी झाँकी शायद ही कहीं और मिले।

ऐसा व्यक्ति जब दिल्ली आया तो लगा कि जैसे गांव की निष्कलुष आत्मा आयी, किसानों का पुरुषार्थ आया, खेत की हरियाली आयी, गाँव की सादगी और चरित्र आया। जो किसान गर्मियों में जलता है, जाड़े में ठिठुरता है, बरसात में भीगता है और भादों की अन्धेरी रात में भी मूसलाधार वर्षा के बीच अपनी फसल को बचाने के लिए कटिबद्ध रहता है, उसका प्रतिनिधि दिल्ली आये - इसकी प्रतीक्षा थी। दिल्ली में देहात का यह कदम जिसे चौधरी चरणसिंह कहते हैं, आया तो खामोशी से, लेकिन जलजला बरपा कर रहा है। कहीं लोग गर्मजोशी से उसके भ्रष्टाचार-उन्मूलन के कार्यक्रम की चर्चा कर रहे हैं, कहीं उसकी गाँधीवादी अर्थनीति का बखान कर रहे हैं, कहीं उसके मंत्रालय द्वारा भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, ऊँचे सरकारी कर्मचारी और बड़े से बड़े पूँजीपतियों की गिरफ्तारी पर बहस कर रहे हैं यानी कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ उसकी चर्चा न हो चाहे तारीफ में या नुकताचीनी में। सराहना या समालोचना, अवहेलना कभी नहीं; हर हालत में लोगों के दिल व दिमाग में, जबान पर। लेकिन इन सारे विवादों में वह 'निवात निष्कम्पमिव प्रदीपम्' के रूप में अपना काम करता जा रहा है।

आश्चर्य नहीं कि लोग इसे अपनी मिट्टी का बना देवता मानते हैं। इसमें अपनी मिट्टी की सुगन्ध, अपनी मिट्टी की सादगी और अपनी मिट्टी की बुलन्दी पाते हैं। इस अजीबो गरीब रहनुमा की लोकप्रियता का रहस्य क्या है यह उसकी बड़ी-बड़ी भावपूर्ण आखों में तो शायद आप पढ़ सकें लेकिन राजनीतिक खुर्दबीन से भी नहीं देख सकते।

भविष्य की आशा

□ प्रो० बलराज मधोक

गत कुछ वर्षों में भारत के राजनैतिक क्षितिज पर जो कुछ लोग उभरे हैं उनमें चौधरी चरणसिंह का नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय है। वैचारिक दृष्टि से जनता सरकार पर उनका प्रभाव सर्वाधिक है। यदि वे अपने साथ अच्छे साथी जुटा पाते तो भारत की राजनीति में उनका भविष्य अति उज्ज्वल हो सकता है।

मेरा चौधरी चरणसिंह से प्रथम परिचय सन् १९६७ में हुआ। मैं उस समय अखिल भारतीय जनसंघ का अध्यक्ष था और वे जनसंघ के समर्थन से बनी उत्तर प्रदेश की संविद सरकार के मुख्यमंत्री थे। मैंने उन्हें जनसंघ में शामिल होने का निमन्त्रण दिया। जनसंघ के प्रदेश मन्त्री श्री नाना जी देशमुख मेरे साथ थे। चौधरी साहब ने मेरे निमन्त्रण को स्वीकार करने के स्थान पर मेरे सामने अपना त्यागपत्र रख दिया और कहा क्योंकि आप लोगों ने मुझे मुख्यमन्त्री बनाया है इसलिए मैं चाहूंगा कि आप ही इस त्यागपत्र को राज्यपाल के पास भेज दें। मेरे कारण पूछने पर उन्होंने बताया कि वे अपने आपको विचारधारा की दृष्टि से जनसंघ के अतिनिकट समझते थे और फिर देशमुख की ओर देखते हुए कहा कि इन लोगों के साथ काम करने के गत दस महीनों के अनुभव के बाद मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि जनसंघ में उस आदमी का कोई भविष्य नहीं जो रा० स्व० सेवक संघ का सदस्य नहीं, जन्म से ब्राह्मण न हो और हाँ में हाँ मिलाने वाला न हो। मुझमें ये तीनों बातें नहीं हैं इसलिये मेरा जनसंघ में आने का प्रश्न ही नहीं उठता। मैं उनकी स्पष्टवादिता से बड़ा प्रभावित हुआ। उनकी दूसरी बात जिसने मुझे प्रभावित किया, वह था उनका सरल स्वभाव, सादा जीवन और महर्षि दयानन्द के प्रति उनका अनुराग। अपनी बैठक में लगे एक मात्र महर्षि दयानन्द के चित्र की ओर इंगित करते हुए उन्होंने कहा कि मैं इन्हें ही अपना गुरु मानता हूं और इन्हीं के आदर्शों पर चलने का प्रयत्न करता हूं। महर्षि दयानन्द मेरे भी प्रेरणा स्रोत हैं। इसलिये स्वाभाविक रूप से मैं उनकी ओर खिचने लगा।

कुछ मास बाद जब संविद सरकार टूट चुकी थी तब मुझे लखनऊ के रोटरी क्लब में राजनीतिक स्थिति पर बोलने का अवसर मिला। उस भाषण में, जिसको समाचार पत्रों ने विस्तार से छापा था, मैंने चौधरी चरणसिंह का भी उल्लेख किया और कहा कि मुझे उनमें सरदार पटेल के कुछ गुण दीखते हैं और उनके उज्ज्वल राजनीतिक भविष्य की भविष्यवाणी की। मेरे जनसंघ के साथियों को चौधरी चरणसिंह के सम्बन्ध में ये प्रशंसात्मक वाक्य अच्छे नहीं लगे। उनका कहना था कि मेरा मूल्यांकन गलत है और मुझे चौधरी चरणसिंह को इस प्रकार उठाना नहीं चाहिए।

समय बीतता गया। १९६९ के राष्ट्रपति के चुनाव में चौधरी चरणसिंह द्वारा अपने दल के दूसरी वरीयता के मत श्री गिरि को देने से मुझे घोर निराशा भी हुई। श्री गिरि चौधरी चरणसिंह के दल के मतों से ही राष्ट्रपति बने और और उनके राष्ट्रपति बनने के कारण ही श्रीमती इन्दिरा गाँधी को देश पर अपना तानाशाही शिकंजा कसने का अवसर मिला। चौधरी चरणसिंह को भी शीघ्र ही इन्दिरा

गांधी से निराश होना पड़ा और वे उसे और कांग्रेस को सत्ता से हटाने के लिए विरोधी दलों के ध्रुवीकरण के प्रबल समर्थक बन गये।

सन् १९७३ में मेरे जनसंघ से अलग होने और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल के निर्माण के बाद चौधरी चरणसिंह मुझे लखनऊ में मिले और मुझे बी० के० डी० के साथ सहयोग करने का सुझाव दिया। मैंने उनके सुझाव को पसन्द किया। उस समय उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव निकट थे और मेरा प्रयत्न था कि सभी राष्ट्रवादी विरोधी दल वह चुनाव मिलकर लड़ें। कुछ दिनों के बाद मुझे यह जानकर निराशा हुई कि केवल जनसंघ, संगठन कांग्रेस और बी० के० डी० में कोई तालमेल नहीं हुआ अपितु चौधरी चरणसिंह ने श्री राजनारायण के संसोपा और श्री फरीदी की मुसलिम मजलिस के साथ तालमेल कर लिया है। मुझे यह तालमेल पूर्णतया अवसरवादी लगा। मेरा मत था कि इस तालमेल से चौधरी चरणसिंह की प्रतिष्ठा और उनकी वैचारिक शुद्धता को धक्का लगेगा। मेरा यह भी निश्चित मत था कि मुसलिम मजलिस से गठजोड़ के बावजूद मुसलिम मतदाताओं के प्रथम वरीयता जीतने वाले मुसलिम लीगी, दूसरी वरीयता अन्य दलों के जीतने वाले मुसलिम प्रत्याशी और शेष स्थानों पर कांग्रेस रहेगी। ऐसा ही हुआ चौधरी चरणसिंह का दल उत्तर प्रदेश के चुनाव में विरोध पक्ष में सबसे बड़ा दल अवश्य बन गया परन्तु बहुमत से बहुत दूर रहा। जनसंघ और संगठन काँग्रेस की स्थिति इससे बदतर रही और कांग्रेस केवल ३२ प्रतिशत मत लेकर पुनः सत्ता-रूढ़ हो गई। इस ठोकर के बाद देश में विरोधी दलों के ध्रुवीकरण के पक्ष में प्रबल बहुमत बनने लगा।

१३ अप्रैल सन् १९७४ को बैसाखी के शुभ पर्व पर मेरे निमन्त्रण पर चौधरी चरणसिंह दिल्ली के निवास पर आये और वहाँ पर विरोधी दलों को मिलाने की प्रक्रिया पर विचार विनिमय हुआ। फलस्वरूप कुछ दिनों बाद भा० क्रा० दल, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक दल, स्वतन्त्र पार्टी, उत्कल कांग्रेस और संसोपा के विलय से भारतीय लोक दल का निर्माण हुआ और चौधरी चरणसिंह इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष चुने गये। इस प्रकार चौधरी चरणसिंह राष्ट्रीय रंगमंच पर आये।

जनता पार्टी के निर्माण और उत्तर भारत में इसकी विजय में उनकी भूमिका सर्वविदित है। मार्च सन् १९७७ में चौधरी चरणसिंह जनता पार्टी में सबसे सशक्त और प्रतिभावान नेता के रूप में उभरे। देश में आज राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण पैदा हो रहा है। जनता पार्टी के अन्दर भी वैचारिक और व्यक्तिगत आधार पर अन्तर्कलह चल रहा है। इस स्थिति में चौधरी चरणसिंह अपनी स्पष्ट विचारधारा के आधार पर जनता पार्टी और देश को एक रचनात्मक दिशा और नेतृत्व दे सकते हैं। यह स्थिति उनके लिए एक अवसर भी है और चुनौती भी। मेरी कामना है कि वे इस अवसर का सदुपयोग और चुनौती का मुकाबला करने में सफल हों।

●

श्रम श्रेष्ठ पुरुषों की श्रेष्ठता का मूलमंत्र है।

—सेनेका

स्वच्छ प्रशासन की ओर

□ [श्री यादवेन्द्र दत्त
संसद सदस्य भारत

आदरणीय चौधरी साहब को मैं १९५७ से जानता हूँ। मै जब विधान सभा में आया उस समय से उनकी दृढ़ता, विचार निष्ठा, ईमानदारी एवं प्रशासनिक कला की प्रशंसा में सुनता था उसके कारण स्वाभाविक आकर्षण मेरा उनके प्रति हुआ। ज्यों-ज्यों उनके निकट मैं आता गया त्यों-त्यों उनके यह सारे गुण स्पष्ट मेरे सम्मुख आते गये। वे कांग्रेस के मंत्री थे, मैं विरोधी पक्ष का नेता था, और चकबन्दी के विषय पर हम लोगों ने बहुत हल्ला किया कि भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है। वे ही एक ऐसे मंत्री थे, कांग्रेस के अंदर जिन्होंने हम लोगों के सारे भाषणों का उत्तर एक लाइन में दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि माननीय सदस्यगण प्रामाणिकता से जिस भी अधिकारी के विरुद्ध भ्रष्टाचार की बात मेरे सामने रखेंगे मैं तुरन्त उस अधिकारी को निकाल दूँगा। हम लोगों ने दो, एक नाम चौधरी साहब को दिये और उनके प्रमाण भी दिये। देखने के बाद जैसे ही वह संतुष्ट हो गये उन्होंने तुरन्त कदम उठाया और कठोर कदम उठाया। यह इस बात का प्रमाण है कि शासन की कला का जो व्यक्ति माहिर है उसने तुरन्त निर्णय लेकर कठोर कदम उठाया और उसका सफलता पूर्वक पालन किया।

अगर मैं एक शब्द में कहूँ कि देश के अन्दर व्याप्त भ्रष्टाचार और अनैतिकता को यदि कोई भी नष्ट कर सकता है तो सिवाय चौधरी चरणसिंह के दूसरा कोई व्यक्ति नहीं है। और जिस दिन से वह गृह-मंत्री हुए हैं उस दिन से सारे शासनतंत्र के अन्दर उनकी दृढ़ता, उनकी ईमानदारी की छाप आगई है और भ्रष्टाचार बहुत अंशों में कम होता चला जा रहा है। उन्हीं का विचार आज सत्य साबित हो रहा है कि भ्रष्टाचार नीचे से नहीं होता बल्कि ऊपर से होता है और ऊपर के भ्रष्टाचारियों को दण्ड देने के लिए भारतीय न्याय और नियम के अन्तर्गत उन्होंने कदम उठाया जिस कदम का प्रत्यक्ष स्वरूप सामने आ रहा है और जिसके कारण राजनीतिज्ञों में भ्रष्टाचार की ओर कदम बढ़ाने का साहस नहीं हो रहा है। अगर एक शब्द में कहा जाय तो सरदार पटेल के बाद यदि कोई लौह पुरुष इस देश में हुआ है तो चौधरी चरणसिंह। सरदार पटेल ने देश का एकीकरण किया और चौधरी चरणसिंह देश का शुद्धीकरण कर रहे हैं। देश के अन्दर से भ्रष्टाचार, अनाचार और अत्याचार को समाप्त कर रहे हैं।

ऐसे महान व्यक्तित्व का व्यक्ति सदियों में एक, दो बार आता है। और भगवान से हम सब की यही कामना है कि आदरणीय चौधरी साहब शतायु हों जिससे कि देश को एक बार इसकी बुराइयों से शुद्ध करके एक नैतिकतापूर्ण सफल और यशस्वी देश बना सकें।

●

प्राण-शक्ति का तेजस्वी पुंज

□ भगवती चरण वर्मा

जहाँ तक मुझे याद है चौधरी चरणसिंह के प्रथम दर्शन मुझे मेरठ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर सन् १९४९ में हुए थे। मेरठ हिन्दी साहित्य सम्मेलन से सम्बद्ध कवि-सम्मेलन का मैं सभापति था—और वह कवि सम्मेलन देश की भावी गतिविधियों का प्रतीक था। पण्डाल खचाखच भरा था। हुल्लड़बाजी का जोर था। गाली-गलौज की बौछार थी। लेकिन नितान्त निस्पृह-सा मैं उस सम्मेलन से निपट रहा था। वैसे मेरे अन्दर भय अवश्य था कि कहीं मैं उखड़ न जाऊँ या वह कवि-सम्मेलन न उखड़ जाए और एकाएक मैं चौंक उठा। प्रायः सात-आठ कार्य-कर्त्ताओं के साथ एक व्यक्ति ने पण्डाल में प्रवेश किया, अचानक हुल्लड़बाजी बन्द हो गई और वह व्यक्ति अपने साथियों के साथ श्रोताओं की अगली पंक्ति में बैठ गया या बैठाल दिया गया। वहीं मुझे बतलाया गया कि वह व्यक्ति उत्तर प्रदेश सरकार के पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी चौधरी चरण-सिंह हैं। दुबला-पतला आदमी, वैसे ऊपर से व्यक्तित्व-विहीन दिखने वाला, खादी का कुर्त्ता-धोती, सिर पर गाँधी-कैप—लेकिन आवाज में एक तरह का तीखापन, व्यवहार में अधिकार की भावना।

जीवन के संघर्षों से जूझता हुआ कलकत्ता-बम्बई आदि नगरों की धूल फाकता हुआ मैं एक साल पहले बम्बई से लखनऊ आया था। 'नवजीवन' के प्रधान सम्पादक के रूप में। 'नवजीवन' उन दिनों उत्तर प्रदेश का महत्त्वपूर्ण हिन्दी दैनिक था। पण्डित जवाहर लाल नेहरू के सबसे अधिक विश्वस्त सहयोगी श्री रफी अहमद किदवई के हाथ में 'नव-जीवन' की नीति थी और प्रकाशक एसोसिएटेड जर्नल्स के मैनेजिंग डाइरेक्टर थे श्री फीरोज गाँधी। राजनीति में अपने स्वार्थों को ध्यान में रखकर न जाने कितने समझौते करने पड़ते हैं, लेकिन एक सृजनात्मक साहित्यकार की हैसियत से समझौता करना मेरी प्रवृत्ति और प्रकृति में न था। नौ-दस महीने तक दूसरों की नीतियों को ढोते-ढोते मैं तंग आ गया था। दिसम्बर, सन् १९४९ में मेरे 'नवजीवन' से त्याग-पत्र देने के दो-एक महीने बाद ही मेरठ का वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन हुआ था। बम्बई का मकान छोड़ कर और बम्बई से नाता तोड़ कर तथा फिल्म लाइन को हमेशा के लिए नमस्कार करके मैं लखनऊ आया था। इस्तीफा तो दे दिया था लेकिन भविष्य की गतिविधियों के सम्बन्ध में एक तरह की लापरवाही से भरा अनिश्चय था। मेरठ हिन्दी-साहित्य सम्मेलन में जाने के समय कुछ दिनों तक मन-बहलाव की भावना थी। वैसे मेरे त्यागपत्र के ठीक बाद उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त ने मुझे बुलाकर आश्वासन दिया था कि मुझे लखनऊ से बाहर वापस न जाने देंगे। यहाँ तक कि अपने निजी सचिव द्वारा उत्तर प्रदेश के डाइरेक्टर आफ इन्फार्मेशन के पद का भी प्रस्ताव उन्होंने रखवाया था और उस प्रस्ताव को मैंने अस्वीकार कर दिया था। सरकारी नौकरी की मैं कल्पना ही नही कर सकता था।

मेरठ से दिल्ली और फिर लखनऊ वापस आ गया। मेरे लखनऊ लौटने के बाद पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त ने मुझे फिर याद किया। उत्तर प्रदेश सरकार ने देश की

स्वतन्त्रता के बाद सर्वप्रथम देश के आर्थिक ढाँचे में आमूल परिवर्त्तन करने वाला जमींदारी उन्मूलन बिल हाथ में लिया था। पन्त जी ने उसमें मेरा सहयोग चाहा, उस बिल के प्रचार तथा जानकारी देने का भार मेरे कन्धों पर डाल कर।

प्रथम सम्पर्क गलतफहमियों से युक्त

राजनीतिक और प्रशासनिक मामलों में मेरी जानकारी नहीं के बराबर रही है और आज भी है। लेकिन कलम का जो चमत्कार नियन्ता ने मुझे दिया है उसके बल पर लोग मुझे पण्डित तथा ज्ञानी समझने लगते हैं। दूसरों की बात छोड़ दी जाए, मैं स्वयं अपने धोखे में पड़ जाता हूं। सहयोग देने वाला पन्त जी का प्रस्ताव मैंने स्वीकार कर लिया—उस बिल के प्रचार-विभाग का गैर-सरकारी अध्यक्ष, कार्यकर्त्ता एवं सब कुछ बन कर छह-महीने की अवधि के लिए। और उन्हीं दिनों मैं चौधरी चरणसिंह के निकट सम्पर्क में आया।

चौधरी चरणसिंह पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी थे और पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी के पद को मैं उपेक्षित समझता था। मैं पहले ही कह चुका हूं कि राजनीतिक एवं प्रशासनिक मामलों में मैं कोरा रहा हूं। मैंने जीवन में साहित्य के सृजनात्मक पक्ष को ही महत्ता दी है, बाकी जो कुछ मेरे सामने आया वह बड़े औपचारिक ढंग से जीवन के अध्ययन के क्रम में मैंने ग्रहण तो किया है, लेकिन मैं उसमें डूब नहीं सका।

चौधरी चरणसिंह की देखभाल में यह प्रचार-व्यवस्था थी। यह प्रचार-भार सम्भालने के दो-तीन दिन बाद मुझे चौधरी चरणसिंह से बातें करने का मौका मिला। यानी उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित हुआ।

उसके बाद जो कुछ हुआ वह तो बड़े स्वाभाविक रूप से हुआ। यानी हम दोनों के दृष्टिकोण अलग-अलग, कार्य करने के ढंग अलग-अलग। चौधरी चरणसिंह वैसे तो साधारण पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी थे, लेकिन मुझे यह पता नहीं था कि जमींदारी-उन्मूलन की क्रान्तिकारी और मौलिक योजना उनके विभाग की उपज थी या उसमें उनका प्रमुख योगदान था। स्वाभाविक रूप से उस व्यक्ति के पास एक सबल और न झुकने वाला अहं होना ही चाहिए था और मैं 'चित्रलेखा' एवं 'टेढ़े-मेढ़े रास्ते' उपन्यासों का लेखक, मन ही मन अपने को अमर साहित्यकारों की पंक्ति में समझने वाला व्यक्ति—किसी के आगे झुकना मेरी प्रकृति में ही नहीं था। छह महीने के स्थान पर तीन महीने बाद ही मैंने पन्त जी को अपना त्याग-पत्र दे दिया। उनके बहुत आग्रह पर मैंने अपना त्याग-पत्र तो वापस ले लिया लेकिन दफ्तर में औपचारिक रूप से घण्टे-आध घण्टे के लिए ही जाता था मेरा काम चौधरी चरणसिंह के जिम्मे पड़ गया।

हम दोनों का वह प्रथम सम्पर्क गलतफहमियों से युक्त था। चौधरी साहब को साहित्य और कला में कोई विशेष रुचि नहीं थी। इसलिये यदि वह मुझे उतना बड़ा आदमी नहीं समझ सके जितना बड़ा आदमी मैं अपने को समझा जाना चाहता था तो उसमें चौधरी साहब का कोई दोष नहीं था और मुझे राजनीतिक एवं प्रशासनिक मामलों में दिलचस्पी नहीं थी इसलिये मैं उन्हें उतना महत्त्वपूर्ण राजनीतिज्ञ या प्रशासक नहीं समझ सका, तो इसमें मेरा भी दोष नहीं था। बहरहाल इतना तय है कि इस तरह अलग होने के बाद मेरे अन्दर चौधरी चरणसिंह के प्रति न सौहार्द का भाव था, न आदर का। चौधरी साहब के मन की बात तो मैं नहीं कह सकता, लेकिन इस सम्बन्ध में वह शायद मुझसे अधिक उदार थे, इसका पता मुझे कुछ महीनों बाद ही लग गया।

चौधरी साहब की उदारता

जमींदारी उन्मूलन बिल के पास होने के बाद ही चौधरी चरणसिंह पार्लियामेण्ट्री सेक्रेटरी के पद से उठकर मन्त्रिमण्डल में ले लिये गये और वित्तमन्त्री बन गये। जमींदारियां तेजी के साथ गायब होने लगीं। ताल्लुकेदारी और जमींदारी परम्परा का महत्त्वपूर्ण सरकारी विभाग कोर्ट आफ वार्ड्स खत्म कर दिया गया। कोर्ट आफ वार्ड्स के मैनेजरों की नौकरियां खत्म हो गईं। मेरे चचाजात छोटे भाई दिवंगत श्री परमात्माशरण वर्मा भी कोर्ट आफ वार्ड्स् के मैनेजर थे—बड़े शानदार आदमी, सरकारी

दबदबे में ताल्लुकेदारों का कान काटने वाले। वह एक दिन घबराये हुए मेरे यहाँ आये। चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रहीं थीं उन्होंने मुझे बताया कि कोर्ट आफ वार्ड्स के मैनेजरों को पी० सी० एस० का पद देकर कलेक्शन आफिसर बनाने की योजना चौधरी चरणसिंह ने बनायी है, लेकिन उन्होंने जिन मैनेजरों को इण्टरव्यू में बैठने की अनुमति दी है उनमें उनका नाम नहीं है। बदनाम और बेईमान समझे जाने वाले लोगों को अनुमति नहीं मिली है। मेरे भाई के खिलाफ यह गम्भीर आरोप था।

मुझे आशा तो नहीं थी कि इसमें मैं अपने छोटे भाई की कुछ सहायता कर पाऊँगा, लेकिन मैंने तत्काल चौधरी साहब को फोन मिलाकर उनसे मिलने का समय मांगा। उन्होंने मुझे शाम का समय दिया।

मैं शाम के समय चौधरी साहब के बँगले पर पहुंचा। बड़ी आत्मीयता के साथ वह मुझसे मिले। फिर उन्होंने मुझसे पूछा—'कैसे कष्ट किया वर्मा जी!'

मैंने केवल इतना कहा—'मैं अपने छोटे भाई श्री परमात्माशरण वर्मा. . . .। और इसके पहले कि मैं अपनी बात पूरी करूँ, वह बोल उठे—'वह कोर्ट आफ वार्ड्स का मैनेजर। निहायत बेईमान और भ्रष्ट आदमी है। मैंने उसे भले अफसरों की सूची में नही रखा है।' जैसे हरेक आदमी का नाम, उसकी योग्यता और अयोग्यता उन्हें हिफ्ज हो।

मैं भड़क उठा—'तो फिर आप उस पर बेईमानी और भ्रष्टाचार का मुकदमा चलाकर उसे जेल में भेज दीजिये—मुझे प्रसन्नता होगी। लेकिन बिना सबूत के किसी आदमी की आजीविका छीनने का दण्ड देना तो मेरी समझ में आता नहीं। वैसे आप मिनिस्टर हैं।

चौधरी साहब कुछ सकपकाये, फिर कुछ बल लगा कर उन्होंने कहा—'सबूत तो किसी के खिलाफ कुछ नहीं है, लेकिन फलां डिप्टी मिनिस्टर ने मुझसे शिकायत की है।'

मैंने तमक कर कहा—'फलां डिप्टी मिनिस्टर और उनके अगुवा फलां मिनिस्टर दोनों ही निहायत बेईमान आदमी हैं। तो उनकी बात आप सही समझते हैं और मैं आपसे कहूं कि मेरा छोटा भाई बेईमान हो ही नही सकता, तो आप मेरी बात पर विश्वास नही करेंगे।

चौधरी साहब कुछ सकपकाये, फिर उठते हुए उन्होंने कहा—'अच्छी बात है, आप जाइये, मैं इस पर विचार करूँगा।

मैं चला आया। तीसरे दिन मेरे भाई ने खबर दी कि उसे इण्टरव्यू में सम्मिलित होने का सरकारी आर्डर मिल गया। यह खबर पाकर एकाएक चौधरी चरणसिंह मेरी नजर में बहुत ऊपर उठ गये।

हरेक आदमी को सत्ता के प्रति मोह रहता है—इस मोह के भटकाव से मैं भी नही बचा हूं। सन् १९५० में जब दिल्ली कान्स्टीटुयेन्ट असेम्बली का काम समाप्त हो गया तब फिर से पार्लियामेण्ट का काम आरम्भ हुआ। प्रादेशिक विधानसभाओं में सदस्य कान्स्टीटुयेन्ट असेम्बली में भेजे गये थे, वे वापस आ गये और उनके स्थान पर अन्य नामों के चुनाव का प्रश्न सामने आया। मैंने अपना नाम भी प्रत्याशी के तौर पर भेज दिया था। उत्तर प्रदेश की राजनीति में 'नवजीवन' के प्रधान सम्पादक की हैसियत से मेरा नाम आ चुका था। उत्तर प्रदेश से शायद सैंतीस या अड़तीस आदमी भेजे जाने वाले थे—दो-ढाई सौ आदमी प्रत्याशी थे। उनके चुनाव का प्रश्न पार्लियामेण्ट्री बोर्ड के सामने आया।

१९५० में चौधरी चरणसिंह अपनी समस्त योग्यताओं के बावजूद स्थापित नही हो पा रहे थे। उस समय उत्तर प्रदेश की राजनीति श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन तथा उनके समर्थकगण श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री मोहनलाल गौतम आदि के हाथ में थी, जिनका समर्थन करने के कारण ही मैंने 'नवजीवन' से त्यागपत्र दिया था। पार्लियामेण्ट्री कमेटी ने प्रत्याशियों की छँटनी आरम्भ की, पैंतालीस नामों की तालिका तक पहुंचते-पहुंचते तो मेरा नाम था। फिर इसके बाद उन पैंतालीस नामों में चुनाव का क्रम आया। पार्लियामेण्ट्री बोर्ड के प्रत्येक सदस्य ने अपने-अपने अनुयायी चुन लिये। मैं किसी का अनुयायी था ही नहीं, मेरा नाम गायब हो गया। उसके बाद एक अजीब कटुता और विद्रोह का दौर आया मेरे ऊपर जिसकी अलग कहानी है।

मैंने बम्बई लौटने का कार्यक्रम बनाया। परिवार को यहीं छोड़ कर इलाहाबाद होते हुए बम्बई के लिए रवाना हुआ। लेकिन इलाहाबाद में श्री सुमित्रानन्दन पन्त के आग्रह से मैंने लखनऊ में ही रेडियो में हिन्दी सलाहकार का पद स्वीकार कर लिया। बम्बई लौटने की पराजय से मैं बच गया। साथ ही सलाहकार बनने के कारण सरकारी नौकरी के बन्धनों से भी मैं मुक्त रहा।

सद्भावना : न्याय भावना

सत्ता का मोह मुझसे छूटा नहीं। सन् १९५२ के आम चुनाव के लिए प्रत्याशी के रूप में मैंने फिर कांग्रेस पार्लिया मेण्ट्री बोर्ड के सामने अपना आवेदनपत्र भेज दिया—हमीरपुर सीट के लिए। वहाँ मैंने कुछ समय तक वकालत की थी, वहीं मैंने 'चित्रलेखा' लिखना आरम्भ किया था। बोर्ड के किसी सदस्य से मैं मिला नहीं, किसी से कुछ कहा नहीं। कौन-कौन बोर्ड का सदस्य है, इसकी जानकारी हासिल करने की भी मैंने जरूरत नहीं समझी। और एक दिन मुझे चौधरी चरणसिंह का फोन मिला। मैं उनके यहाँ गया। और उन्होंने बताया कि सब स्थानों के नाम चुन लिए गए हैं—एक चुनाव क्षेत्र बचा है, मथुरा-आगरा तथा किसी एक और जिले के भागों का सम्मिलित चुनाव-क्षेत्र। अगर मैं चाहूं तो उस क्षेत्र का टिकट ले लूं। वैसे अगर उस समय वह टिकट मैंने ले लिया होता तो चुन लिया गया होता, लेकिन राजनीति से अलग का आदमी होने के कारण मैंने वह टिकट लेना अस्वीकार कर दिया—चौधरी साहब को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हुए। उनसे बात करने पर मुझे यह आभास हुआ कि उन्होंने व्यक्तिगत रूप से हमीरपुर क्षेत्र से मेरे नाम का पूरा समर्थन किया था लेकिन जन-तान्त्रिक परम्पराओं से विवश वह मेरा नाम स्वीकृत नहीं करा पाए थे।

आज जब सोचता हूं तो लगता है कि शायद अन्दर ही अन्दर चौधरी चरणसिंह में एक तरह की सद्भावना आ गई थी मेरे प्रति। या फिर उनमें न्याय के प्रति एक प्रबल भावना थी। चौधरी चरणसिंह के प्रति मुझमें एक तरह का आदर भाव जाग पड़ा—इस घटना के बाद। लेकिन फिर भी मैं चौधरी से दूर ही रहा। कारण शायद यह था कि मेरे अन्दर अहं का एक पागलपन हमेशा से रहा है और नियति के हिलकोरों में डूबता-उतराता बड़े विवश ढंग से वह रहा था। सन् १९५३ में मुझे आकाशवाणी दिल्ली जाना पड़ा। वहाँ दो-चार बार इस्तीफे दिए और वापस लिए। सन् १९५६ में फिर लखनऊ लौटा और सन १९५७ में आकाशवाणी से त्यागपत्र देकर मैं सृजनात्मक साहित्य में लग गया।

मैं चौधरी चरणसिंह से घनिष्ठता का सम्बन्ध कभी स्थापित नहीं कर सका। हम दोनों के क्षेत्र एक दूसरे से नितान्त अलग, कहीं भी दोनों के स्वार्थों में सामञ्जस्य नहीं, न टकराहट का प्रश्न। वैसे राजनीतिक क्षेत्र में वह दो बार प्रदेश के मुख्यमन्त्री रहे हैं, एक आध बार को छोड़ कर मैं कभी उनके घर नहीं गया—मैंने कभी न उनसे कुछ माँगा, न चाहा। लेकिन वैसे मैंने हमेशा उन्हें अपना निकटस्थ समझा। इसका यह कारण है, मैंने हमेशा यह अनुभव किया कि मेरी ही भाँति उनमें भी अहं का एक पागलपन है, और सच बात तो यह है कि अहं का यह पागलपन मुझे बड़ा प्यारा लगता है।

विरोध का साहस

मुझे याद है भारत के उस समय के प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू से चौधरी चरणसिंह के मतभेद की बात। श्री जवाहरलाल नेहरू पर समाजवाद का गहरा रंग था और वह देश में कोआपरेटिव फार्मिंग पर जोर दे रहे थे। चौधरी चरणसिंह स्वयं किसान वंश के आदमी हैं। उन्हें इस सामूहिक खेती पर सिद्धान्ततः विश्वास न था। मतभेद अधिक उभरा—पत्रों में इस मतभेद की बातें बढ़ा-चढ़ाकर छपीं। ऐसा लगता था कि श्री चरणसिंह कांग्रेस से अलग हो जायेंगे—काँग्रेस पर पण्डित जवाहरलाल का एक-छत्र प्रभुत्व था। लेकिन ऐसा कुछ न हुआ। भारतीय वातावरण में यह सामूहिक खेती की परिकल्पना ही असम्भव थी। मुझे आश्चर्य तो इस बात पर था कि चौधरी चरणसिंह को कांग्रेस के अन्दर रह कर जवाहरलाल का खुलमखुल्ला विरोध करने का साहस कैसे पड़ा, अन्य कांग्रेसी नेता तो गुलामी के बन्धनों से जकड़े हुए थे। लेकिन चरणसिंह का यह विरोध उनके लिए कांग्रेस में उन्नति करने के मार्ग में कुछ समय के लिए अवरोध ही रहा।

अपने ऊपर असीम विश्वास से युक्त, स्वभाव से शान्त और संयत लेकिन न झुकने, न दबने वाली प्रवृत्ति से ग्रस्त, पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त के उत्तर प्रदेश से केन्द्र के गृह-मन्त्री बन जाने के बाद चौधरी साहब ने राजनीतिक संघर्षों के क्षेत्र में प्रवेश किया। पन्तजी के बाद डा० सम्पूर्णानन्द प्रदेश के मुख्यमन्त्री बने—डा० सम्पूर्णानन्द स्वयं एक सबल अहं से युक्त थे। स्वभावतः चौधरी चरणसिंह से उनकी नहीं बनी। सम्पूर्णानन्द के मुख्यमन्त्रित्व काल में उनसे मतभेदों के कारण चौधरी चरणसिंह ने प्रदेश के मन्त्रिमण्डल से त्यागपत्र दे दिया। उस त्यागपत्र की बात मै केवल चौधरी साहब के दिलचस्प पहलू को प्रस्तुत करने के लिए लिख रहा हूं।

इतना ईमानदार आदमी मैंने कभी न देखा था.

मेरे एक मित्र हैं पण्डित बलभद्र प्रसाद मिश्र जो किसी समय इलाहाबाद के दैनिक 'भारत' के प्रधान सम्पादक थे। लेकिन बाद में सूचना विभाग में डाइरेक्टर के पद पर आ गए थे। पण्डित बलभद्रप्रसाद का एक पहलू था—गो-पालन एवं गो-सेवा। एक दिन कुछ प्रफुल्लित, कुछ उत्तेजित से वह मुझसे मिले और उन्होंने मुझे सूचना दी कि उन्हें एक अच्छी दुधारू गाय मुफ्त में मिल गई है। उन्होंने बताया कि चौधरी चरणसिंह ने मन्त्रिपद से त्यागपत्र देने के बाद उन्हें बुलाया। मिश्रजी से उन्होंने कहा—"मिश्रजी, मैंने मन्त्रिपद से त्यागपत्र दे दिया है। बंगला गया, नौकर-चाकर गए, मेरी गाय की देखभाल कौन करेगा। हमारे यहाँ गाय बेंची नहीं जाती। इसलिए आप यह गाय ले जाइए। आप सुपात्र हैं।"

मैं पण्डित बलभद्रप्रसाद मिश्र की बात सुनकर दंग रह गया। इतने लम्बे काल तक उत्तर प्रदेश सरकार के विभिन्न विभागों में मन्त्री रह कर भी वह अपने को गाय रखने में असमर्थ पा रहे थे। दूसरों से अपने लिये लेना जैसे इनकी प्रकृति में न था। चौधरी चरणसिंह मेरी नजरों में बहुत ऊँचे उठ गए। इतना ईमानदार आदमी मैंने कभी न देखा था।

और ईमानदारी शब्द पर मैं अटक जाता हूं। ईमानदारी का नकारात्मक पहलू है बेईमानी और यह बेईमानी मुझे अपने इर्द-गिर्द हर जगह दिखती है। ईमानदारी व्यक्तिगत संज्ञा है। बेईमानी सामाजिक संज्ञा है और बेईमानी के मापदण्ड क्या हैं, यह बड़ा विवादास्पद विषय है। चौधरी चरणसिंह की नजर में बेईमानी शब्द का प्रयोग विशुद्ध रूप से आर्थिक मामलों में किया जा सकता है। और मैं किसी हद तक चौधरी चरणसिंह के इस दृष्टिकोण से सहमत हूं। राजनीति की अपनी निजी मान्यतायें होती हैं। चाणक्य, मेकियावली ये तो नीतिशास्त्री हैं, भगवान कृष्ण तक ने साध्य को सामने रखकर साधन की उपेक्षा की है। आर्थिक बेईमानी स्वार्थ में डूबी हुई समाज विरोधी संज्ञा है। जब कि अन्य प्रकार की बेईमानियाँ विशेष समाज या अन्य व्यक्तियों के भले के लिए भी हो सकती हैं।

राजनीति में वह आर्थिक मामलों में बेईमानी कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सके। परिस्थितिवश समय-समय पर उन्हें इस तरह के आदमियों से समझौता करना पड़ा है। उन्होंने अपनी पार्टियां बनाईं—अनेक घनिष्ट सहयोगी उन्होंने बनाए लेकिन उनकी बेईमानियां जाहिर होते ही अपने सहयोगियों से वह हट गए। पार्टियों के लोगों ने उनका साथ छोड़ दिया।

उन पर आम तौर से यह आरोप लगाया जाता है कि वह दल बदलते रहे हैं। लेकिन मैं कहता हूं कि वे दल नहीं बदलते रहे, अपना नया दल बनाते और तोड़ते रहे हैं। राजनीति स्वयं में दलगत संज्ञा है। मुझे याद है कि श्री चन्द्रभानु गुप्त के शासन-काल में सत्रह अनुयायियों के साथ कांग्रेस छोड़कर उन्होंने भारतीय क्रांतिदल की स्थापना की और फिर कुछ स्वतन्त्र व्यक्तियों को भारतीय क्रांतिदल में सम्मिलित करके एवं जनसंघ तथा सोशलिस्ट पार्टियों के सहयोग से प्रदेश के मुख्यमन्त्री के रूप में उन्होंने प्रदेश के शासन की बागडोर सम्भाली। इस संविद सरकार के विभिन्न घटकों के मन्त्रियों से ऊब कर उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। संविद सरकार टूट गई और कांग्रेस के हाथ में फिर प्रदेश का शासन आ गया।

श्री गिरि और श्री संजीव रेड्डी के देश के राष्ट्रपति के चुनाव के सिलसिले में स्वयं कांग्रेस का विघटन आरम्भ हुआ। कांग्रेस के स्थापित नेताओं ने भारत की प्रधानमन्त्री

श्रीमती इन्दिरा गाँधी का विरोध किया। श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने श्री गिरि का समर्थन किया था और श्रीमती इन्दिरा गाँधी नई-नई प्रधानमन्त्री बनी थीं। चौधरी चरण-सिंह के भारतीय क्रान्तिदल ने एक स्वर में श्री गिरि का समर्थन किया और श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्थिति मजबूत हो गई। कांग्रेस के मुख्य नेता संगठन कांग्रेस (पुरानी कांग्रेस) के नाम से अलग दल बना कर विरोध पक्ष में आ गए।

कांग्रेस की उस फूट के बाद इन्दिरा गाँधी ने प्रदेश में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के लिए भारतीय क्रांतिदल का, जिसकी संख्या सौ तक आ गई थी, सहारा लिया। चरण-सिंह ने मुख्यमन्त्रित्व के पद को स्वीकार करके भारतीय क्रांतिदल एवं कांग्रेस की मिलीजुली सरकार बनाई। शायद कहीं एक मौखिक या मानसिक समझौता भी था कि चौधरी चरणसिंह अपने दल के साथ कांग्रेस में शामिल हो जाएंगे। उस सरकार के दौरान उत्तर प्रदेश ने वास्तव में उन्नति की। उस समय वाली शासन-व्यवस्था जितनी गठी हुई थी उतनी फिर कभी न हो पाई।

और फिर वही व्यक्तियों की टकराहट। चौधरी चरण-सिंह ने त्यागपत्र दे दिया और फिर वह तटस्थ हो कर बैठ गए। बहुत थोड़े समय में ही भारतीय क्रांतिदल के अधिकांश सदस्य कांग्रेस में शामिल हो गए।

गजब की प्राण-शक्ति मिली है उस आदमी को। जैसे अपने अहं पर तथा अपनी योग्यता पर उसे असीम और अटूट विश्वास हो। कांग्रेस में तानाशाही का बोल-बाला आया। एक लम्बे काल तक पूंजी से युक्त संगठन था उसके पास। कांग्रेस की फूट के बाद कांग्रेस इन्दिरा गाँधी के अयोग्य और अकर्मण्य गुलामों की संस्था बन गई थी। विशेषरूप से भारत-पाक युद्ध में पाकिस्तान की पराजय के बाद। कांग्रेस के विरोधी अनेक दलों में बंटे हुए थे। चौधरी चरणसिंह ने इन दलों को एक करके तानाशाही के स्थान पर फिर जनतन्त्र स्थापित करने की कल्पना की। और चौधरी चरणसिंह ने कुछ पार्टियों को ले कर भारतीय लोक दल की स्थापना की। लेकिन विरोध-पक्ष के मुख्य घटकों में कांग्रेस (विपक्ष) तथा जनसंघ ने चौधरी साहब के नेतृत्व को अस्वीकार कर दिया और चौधरी साहब की परिकल्पना असफल रही। कांग्रेस वैसी की वैसी शक्तिशाली बनी रही। चारों ओर भ्रष्टाचार और बेईमानी का दौर। भारत-पाकिस्तान युद्ध के परिणामस्वरूप देश की आर्थिक व्यवस्था प्रायः नष्ट हो चुकी थी। और इस बीच इन्दिरा गाँधी के विरुद्ध राजनारायण की चुनाव-याचिका का निर्णय। घटनायें तेजी के साथ घटीं और फिर इमरजेन्सी की घोषणा, मीसा का सहारा, प्रेस की जबान बन्द कर दी गई। जितने विरोधी नेता थे सब जेलों में बन्द कर दिए गए। कौन मर गया, कौन मार डाला गया, किसे कितनी यातनायें दी गईं, कहाँ-कहाँ गोलियाँ चलीं—किसी को पता ही नहीं, कोई खबर छप ही नहीं सकती थी। इस सब की एक भयानक प्रतिक्रिया विश्व भर में हुई। भारतीय शासन की कड़ी आलोचना सारी दुनियाँ में हुई। देश में इस घुटन के वातावरण का फायदा उठा कर विश्व पर यह प्रमाणित करने के लिए कि भारत की जनता कांग्रेस एवं इन्दिरा गाँधी का समर्थन कर रही है, एक दिन—एक महीने बाद ही चुनावों की घोषणा। अधिकाँश विरोधी नेता मुक्त कर दिए गये।

अटूट विश्वास तथा प्राण-शक्ति

कुछ ऐसा लगता था कि कांग्रेस इस बार भी सफल होगी। लेकिन चौधरी चरणसिंह के अन्दर अटूट विश्वास तथा। उनकी प्राण-शक्ति ने जोर मारा और भारतीय लोकदल के स्थान पर उन्होंने जनता पार्टी का गठन किया। इस बार जनसंघ ने चौधरी चरणसिंह को पूरा सहयोग दिया। इमरजेन्सी के अत्याचारों का पूर्ण प्रहार जनसंघ पर पड़ा था। कांगों ने पहले तो नेतृत्व के प्रश्न को लेकर सम्मिलित होने से इन्कार किया लेकिन चौधरी चरणसिंह देश-हित को ध्यान में रख कर मोरार जी देसाई को नेतृत्व सौंपने पर राजी हो गये। जनता पार्टी बन गई। श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने कल्पना ही नहीं की थी कि इतने अल्प समय में सब विरोधी पार्टियाँ एक हो जाएंगी तथा शासन-अत्याचारों के कारण जनता में कांग्रेस के प्रति घृणा की प्रबल भावना भर गई है। चुनाव हुए और कांग्रेस पूरी तौर से पराजित हुई। विशेष रूप से उत्तर भारत में जहां इन्दिरा गाँधी के निकटस्थ अनुयायियों द्वारा भयानक ज्यादतियाँ हुई थीं।

कांग्रेस की इस पराजय में तथा विभिन्न पार्टियों के

जनता पार्टी में सम्मिलित होने में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान एक और व्यक्ति का भी रहा है ; वह है श्री जयप्रकाश नारायण का।

श्री जयप्रकाश नारायण से मेरा परिचय नहीं के बराबर है; लेकिन श्री जयप्रकाश नारायण के प्रति मुझमें आदर की भावना है। राजनीतिक महत्त्वाकाँक्षा से सर्वथा मुक्त, उनका समस्त जीवन समर्पण का रहा है। ढोंग-आडम्बर, छल-कपट, दाँव-पेंच से सर्वथा मुक्त–मैं उन्हें महान ऋषि समझता हूँ लेकिन मैं उन्हें युग-प्रवर्तकों की कोटि में न रख सकूंगा। सिद्धान्तों के प्रतिपादन में और उन सिद्धान्तों की स्थापना के क्रम में अन्तर होता है। स्थापना में व्यक्तित्वों में टकराहट, संघर्षों का क्रम रहता है। एक दूसरे के विरोधी सिद्धान्तों के प्रतिपादन के परिणामों का पता तब तक नहीं लग पाता जब तक उन सिद्धान्तों के कार्यान्वयन का प्रश्न सामने नही आता।

श्री जयप्रकाश नारायण के नाम का उल्लेख मुझे इस-लिये करना पड़ रहा है कि जनता पार्टी में जो अन्दरूनी विग्रह चल रहा है उसमें जगह-जगह पर श्री जयप्रकाश नारायण की दुहाई दी जा रही है। श्री मोरारजी देसाई, श्री जगजीवन राम, श्री चन्द्रशेखर–सभी तो श्री जयप्रकाश नारायण की दुहाई दे रहे हैं। एक विचित्र सा नाटक हो रहा है देश में।

मैं यह नहीं भूल पाता कि पिछले आम-चुनावों में पार्टियों के मामले में जनता का वोट निगेटिव यानी नकारा-त्मक था। कांग्रेस जनता की नजर में अत्याचार, भ्रष्टा-चार और चरित्रहीनता की प्रतीक थी। ईमानदार और भले से भले 'कांग्रेस के आदमी हारे'–और एक से एक बदमाश, बेईमान आदमी जो विरोधी पक्ष से खड़े हुये थे चुन लिये गये। जैसे तीस साल तक कांग्रेस के झूठे वायदों से, पैसे की राजनीति के नंगेपन से जनता एकाएक विद्रोह कर उठी हो। सिद्धान्तों के मामले में वह वोट पाजिटिव या सक्रिय था।

तमाशा चल रहा है

देश जैसे एकाएक भयानक अराजकता के दौर में आ पड़ा है। तीस वर्ष के कांग्रेस शासन के लम्बे दौर में देश लगातार गिरता ही गया है। एक के बाद एक समस्यायें पैदा होती गई हैं। उन समस्याओं के कृत्रिम निदान निकाले गये और हरेक निदान स्वयं में एक समस्या बन गया। विश्व में वैज्ञानिक उन्नति और विकास के फलस्वरूप भारतवर्ष ने भी उन्नति की, इससे तो इन्कार नहीं किया जा सकता, लेकिन अमीरी और गरीबी के बीच वाली खाई बढ़ती गई।

दिल्ली में तथा अधिकांश प्रदेशों से कांग्रेस के पैर उखड़ गये हैं, लेकिन कांग्रेस के स्थान पर किस संगठित दल के नेतृत्व को देश ग्रहण करेगा यह अभी स्पष्ट नहीं हो पा रहा है। इमरजेन्सी की स्थिति से निकल देश ने एक राहत की सांस ले ली है, लेकिन देश में स्वतन्त्रता की नई लहर ने अराजकता का रूप धारण करना आरम्भ कर दिया है। चोरी-डकैती-हत्या-लूट–चारों तरफ से विकृतियाँ उभर आई हैं। हर तरफ आपाधापी और छीना-झपटी।

तमाशा चल रहा है–इस तमाशे का अगला रूप क्या होगा ? मुझे पता नहीं। कीमतें बेतहाशा बढ़ रही हैं, अर्थ-लोलुपों का नंगा नाच हो रहा है–जैसे हरेक आदमी बेईमान बन गया हो। विवश और पराजित सा जनसमूह जनता सरकार को गालियाँ देने लगा है। यह जनता-सरकार स्वयं में विगठित और प्रभावहीन दिख रही है क्योंकि इसका कोई सबल और सक्षम नेतृत्व नहीं है। जितने भी बड़े नेता हैं, सब-के-सब जाने पहचाने।

और मेरी नजर चरणसिंह पर अटक जाती है। इस आदमी पर हर तरफ से प्रहार हो रहे हैं। पराजित 'कांग्रेस-मैन' एक स्वर में इस आदमी को गालियाँ दे रहे हैं। इसी के कारण कांग्रेस पराजित हुई, देश पर कांग्रेस का जबर्दस्त शिकंजा टूटा, जनता पार्टी के विभिन्न घटकों के नेता इसे बदनाम कर रहे हैं, ताकि यह आदमी देश का एकमात्र नेता न बन जाये। हर तरफ इसी आदमी का विरोध, इसे बद-नाम करने का प्रयत्न।

जनता पार्टी तो बन गई है, लेकिन उन विरोधी पार्टियों के घटक वैसे के वैसे मौजूद हैं। अगर कहीं विलय की प्रवृत्ति दिखती है तो वह चरणसिंह के भारतीय लोकदल तथा जनसंघ में।

तमाशा चल रहा है। जनता हर्षध्वनि कर रही है, पुराने अपराधियों के दण्ड पाने पर। जनता रो रही है, चिल्ला रही है, गालियाँ दे रही है, नये-नये अपराधियों की लूट पर, बढ़ती कीमतों पर, देश भर में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता पर। किसी को स्पष्ट यह पता नहीं कि क्या हो रहा है, कैसे हो रहा है? और इस तमाशे से चौधरी चरणसिंह की स्पष्ट तथा उन्हें स्वयं चक्कर में डालने वाली भूमिका है। इस सब की मौजूदगी में मुझे यह भरोसा नहीं है कि यह आदमी टिका रह सकेगा—इसके पागलपन को देखते हुए, लेकिन दुनिया में असम्भव कुछ नहीं है।

चौधरी चरणसिंह दक्षिणपन्थी हैं, लेकिन दक्षिणपन्थ की स्वाभाविक विकृतियों के विरोधी। उन्होंने स्वयं सामन्तवाद को नष्ट करने में महत्त्वपूर्ण काम किया है। आर्थिक विषमता के वह सबसे बड़े विरोधी हैं। गाँधीवाद के हृदय परिवर्तन पर उन्हें अटूट विश्वास है और उनकी समस्त आस्थायें आर्यसमाज की नैतिकता वाली पृष्ठभूमि पर हैं। यही नैतिकता की पृष्ठभूमि जनसंघ का भी तो बल है। लेकिन गाँधीवाद की अहिंसा स्वयं सन्दिग्ध संज्ञा है। गाँधीवाद पर असीम आस्था रखने वाले इस युग के ऋषि श्री जयप्रकाश नारायण देश को बचाने के लिए चीन के माओ वाली सम्पूर्ण क्रान्ति का सहारा ढूँढ़ रहे हैं।

मैं स्वयं कुछ अजीब उलझन में हूँ। नारों में और समाज को बदलने के ठोस कदमों में जमीन आसमान का अन्तर है। जितना मैं चौधरी चरणसिंह को जानता हूँ उसके बल पर मुझे चौधरी चरणसिंह की योग्यताओं पर, उनके चरित्र पर, उनकी नैतिकता पर पूरा विश्वास है, लेकिन अपने अहं और आस्थाओं का पागलपन लिए हुए यह आदमी कब उखड़ जाएगा, मुझे इसका भरोसा नहीं।

निस्पृह सा राजनीति से दूर, साहित्य के सृजनात्मक क्रम में डूबा हुआ मैं एक तमाशाई की भाँति सब कुछ देख रहा हूँ, यह जानते हुए कि यह दक्षिण पन्थ वर्तमान स्थिति में भारत का रूप न बदल सकेगा। चौधरी चरणसिंह के प्रति मेरी शुभ कामनाएं हैं।

●

वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः

—भारवि

महान पुरुषों के साथ विरोध भी उन्नतिकारक ही होता है।

●

सामाजिक क्रान्ति के उद्घोषक

□ ओमप्रकाश त्यागी
संसद सदस्य

स्वतन्त्रताप्राप्ति के पश्चात् भारत को सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में जो दिशा मिलनी चाहिए थी, वह दिशा दुर्भाग्यवश न मिल सकी। हमने पाश्चात्य जगत की आर्थिक नीति का अनुकरण कर बड़ी मशीन एवं बड़े कारखानों का सहारा लिया, जिन्होंने इस देश में गरीब और अमीर, शहर और देहात के मध्य एक बड़ी चौड़ी आर्थिक खाई उत्पन्न कर दी। देश की समस्त सम्पत्ति कुछ मुट्ठी भर बड़े घरानों में चली गई। गरीब, गरीब बनता चला गया, धनी, धनी होता चला गया। साथ ही बेकारी और गरीबी इस देश में चरम सीमा पर पहुँच गई। सामाजिक क्षेत्र में जातिवाद, छुआछूत, संकीर्ण साम्प्रदायिकता एवं भाषावाद के नाम पर आपसी संघर्षों को बढ़ावा मिला। इस प्रकार स्वतन्त्रता के ३० वर्ष पश्चात् राष्ट्र एक बड़े ही संकटकाल में पहुँच गया।

भारत वास्तव में देहातों में निवास करता है। ग्रामीण क्षेत्र की उन्नति को ही वास्तव में भारत की उन्नति कहा जा सकता है। परन्तु इसकी सर्वथा उपेक्षा की गई और राष्ट्र की समूची शक्ति देश के मुठ्ठी भर शहरों को सजाने और पनपाने में लग गई। इस प्रकार श्रद्धेय महात्मा गाँधी के स्वप्नों का भारत स्वप्न बन कर रह गया।

आपात्कालीन स्थिति में देश ने तानाशाही का जो आदर्श देखा उससे जनता की आँखे खुलीं और उन्होंने जीवन में पहली बार प्रजातन्त्र तथा स्वतन्त्रता के मूल्यों को सही रूप में आँका और अनुभव किया। उन्हें महात्मा गाँधी के उन उपदेशों में जिनको देश के शासक दल ने तथ्यहीन समझकर रद्दी की टोकरी में फेंक दिया था उनके प्रति श्रद्धा बढ़ी और उसी तानाशाही के तूफान में भारत में प्रजातन्त्र का उदय हुआ और महात्मा गाँधी के सिद्धान्तों में विश्वास रखने वाले देश के सच्चे राष्ट्रीय नेताओं का उदय हुआ। महात्मा गाँधी के आदर्श अनुयायी अपने सिद्धांतों पर हिमालय की तरह अटल रहने वाले श्रद्धेय मोरार जी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी और इसका गृह विभाग गाँधी के अनन्य भक्त चौधरी चरणसिंह जी ने संभाला। गृहमंत्रालय संभालते ही श्री चौधरी साहब ने जो दृढ़ता एवं दूरदर्शिता का परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है।

माननीय चौधरी चरणसिंह जी ने जो सब से महत्त्व पूर्ण क्रान्तिकारी कार्य किया है, वह देश की आर्थिक नीति को गाँधीवाद के आधार पर मोड़ देना।

इस क्रान्तिकारी पग के लिये भारत सदैव चौधरी चरण सिंह जी का आभारी रहेगा। इसके अनुसार देश में ग्रामीण क्षेत्र का उत्थान होगा। मशीन एवं शक्ति का विकेन्द्रीकरण होगा और गृह उद्योग एवं लघु उद्योगों के द्वारा देश की निर्धनता एवं बेकारी की जटिल समस्या का समाधान होगा और महात्मा गाँधी जी के स्वप्नों का भारत सही रूप में निर्मित होगा।

सामाजिक क्रांति की दिशा में भी एक नवीन क्राँति करते हुए चौधरी चरणसिंह जी ने देश से जातिवाद जो कि समस्त सामाजिक बीमारियों की जड़ है, को समाप्त करने की प्रतिज्ञा की है। इस दिशा में कोई ठोस पग नहीं उठाया गया परन्तु देश में पहली बार इस दिशा में सक्रिय कदम उठाने की जनता सरकार ने प्रतिज्ञा की है। ●

ग्रामीण जनता के हितैषी

गौरीशंकर राय
संसद सदस्य भारत

मुझसे चौधरी चरणसिंह जी से पहली बार भेंट सन् १९५७ में हुई जब मैं उत्तर प्रदेश की विधान सभा में विरोधी दल का एक सदस्य था और चौधरी साहब माल-मंत्री थे। अपने विधायक जीवन का पहला कार्य मैंने प्रारम्भ किया जिसमें मैंने मांग की कि उत्तर प्रदेश और बिहार की स्थायी सीमा होनी चाहिए। पहले दिन जब मैंने यह प्रश्न सदन में उठाया तो उस दिन चौधरी साहब मेरी बात को पूरी तरह समझ नहीं पाये, उन्होंने मुझे बुलाया और मुझसे सुनकर उस समस्या को समझने का प्रयास किया और साथ ही उन्होंने माल विभाग के सचिव को बुलाकर यह कहा कि इनकी पूरी बात सुन कर इस मामले को मेरे सामने रखिये। मैंने सचिव से बार-बार मिलकर अपनी पूरी समस्या को समझाया और उसके बाद चौधरी साहब ने उस समस्या को अपने हाथ में लिया। उसकी अन्तिम सफलता हमें तब मिली जब चौधरी साहब मुख्यमन्त्री हुए और अन्तिम रूप से त्रिवेदी कमीशन द्वारा उत्तर प्रदेश और बिहार की स्थाई सीमा निर्धारित कर दी गई। इस समस्या से लाखों किसानों की जीवन मृत्यु का सम्बन्ध था। इसको सफलता तक पहुंचाने का श्रेय चौधरी साहब को रहा और मैं इस समस्या के साथ लम्बी अवधि तक जुटा रहा और जब-जब इस सम्बन्ध में हमने चौधरी साहब से भेंट की तो उन्होंने इस काम को आगे बढ़ाया।

दूसरी बात मैं यह कभी नहीं भूलता हूँ जब उत्तर प्रदेश के समाजवादियों ने शिकमी किसानों का आंदोलन चलाया जिसमें हम लोगों ने यह मांग की कि जमीन जो जोतता है उस पर उसका अधिकार मान लिया जाये। यह लड़ाई उस समय बंगाल में या केरल में कहीं भी नहीं हुई। चौधरी साहब ने खेत के कब्जे वाले का चाहे वह जबरदस्ती का ही कब्जा क्यों न हो उस पर जोतने वाले का अधिकार मान कर उसको कानून का अंग बना दिया। भारतवर्ष के भूमि सुधार कानूनों में ऐसा प्रगतिशील कोई कानून आज तक पश्चिम बंगाल और केरल में भी नहीं बना। इस कानून ने उत्तर प्रदेश के लाखों भूमिहीनों को भूमि का मालिक बना दिया। जमीदारों के समाप्त होने के बाद जमीन के सम्बन्ध में इसके अतिरिक्त इस देश में कोई और कानून नहीं बना जिसमें इतनी बड़ी मात्रा में भूमिहीनों को भूमि मिली हो। उत्तर प्रदेश और विशेष तौर से पूर्वी उत्तर प्रदेश के दबे हुए तपके के कल्याण के लिए इससे अधिक कोई प्रभावकारी कदम कभी भी किसी सरकार ने नहीं उठाया।

मेरी राय में केन्द्रीय सरकार द्वारा गरीब एवं ग्रामीण जीवन के विकास के लिए अधिक धन आवंटित करने का जो वर्तमान सरकार ने निर्णय किया है इसका श्रेय भी चौधरी साहब को होगा और भारतीय आर्थिक ढांचे का परिवर्तन उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कदम होगा।

मेरी कामना है कि चौधरी साहब शतायु हों और इस देश की ग्रामीण जनता के कल्याण में अधिक से अधिक प्रभावकारी सिद्ध हों।

एक महान पुरुष

□ कुंवर महमूद अली खां
संसद सदस्य

चौधरी चरणसिंह जी किसी भी परिचय के मोहताज नहीं हैं। मैं उनके सम्पर्क में लगभग २० वर्ष अर्थात् १९५७ ई० से हूँ। जब से मैं उनसे अत्यन्त निकट हूँ मैंने उनको बहुत करीब से देखा है, समझा है तथा परखा है।

चौधरी साहब का घर मेरे गांव जोगीपुरा, जिला मेरठ से केवल १।। मील के फासले पर है जिसका नाम है भदौला जो तहसील तथा जिला गाजियाबाद में है। मैंने चौधरी साहब का मकान देखा है जो कच्चा है और छोटा है जैसा कि एक मामूली किसान का होता है। मैंने अपने बचपन में चौधरी साहब के पिता जी को देखा था। आज भी मेरी आँखों के सामने उनका चेहरा है। वह अत्यन्त सुन्दर और तगड़े-तन्दुरुस्त थे। उनका स्वभाव और लिबास दोनों सादा थे। वह मेरे गांव जोगीपुरा आया करते थे। सभी गरीब लोगों की बड़ी सहायता करते थे।

चौधरी चरणसिंह जी बहुत ही साफ बात कहने वाले, गरीबों के प्रति बड़ी सहानुभूति रखने वाले और न्याय-प्रेमी हैं। अपने काम में पूरी लगन और अथक कोशिश करना उनकी बड़ी विशेषता है। समय के बहुत ही पाबन्द हैं। उन्हें किसानों से हमेशा घनिष्ठ प्रेम रहा है। उनकी खुश-हाली और उन्नति के लिए हमेशा चिन्तित रहते हैं। यही कारण है कि उन्होंने जब भारतीय क्रान्ति दल की स्थापना की तो दल का चिन्ह 'हल तथा किसान' रखा।

१९६७ ई० में जब चौधरी साहब ने उत्तर प्रदेश की सरकार बनायी तो उन्होंने अपने मन्त्रिमण्डल में हरिजन, पिछड़ी जाति, अल्प संख्यक तथा समाज के अन्य कमजोर वर्ग के लोगों को सम्मिलित किया था। उसी वर्ष इतिहास में पहली बार चौधरी साहब ने उत्तर प्रदेश लोकसेवा आयोग में जाटव जाति (हरिजन) के श्री दौलतराम निम को सदस्य नियुक्त कराया; तब से बराबर इस आयोग में एक हरिजन सदस्य अवश्य होता है। इसी प्रकार उन्होंने पिछड़ी जाति के श्री रामलाल यादव को आयोग का सदस्य नियुक्त कराया और यह परम्परा भी बराबर चली आ रही है। यहीं श्री यादव १९७४ ई० में आयोग के अध्यक्ष भी नियुक्त हुए।

चौधरी साहब की कोशिशों से समाज के कमजोर वर्ग और मुख्यतः गरीब किसानों को और उत्तर प्रदेश के ग्रामों को जो उत्थान मिला है और जो परिवर्तन आया है उसका उदाहरण मिलना बहुत मुश्किल है।

चौधरी साहब मूलरूप से धार्मिक विचार तथा ईश्वर में सम्पूर्ण विश्वास रखने वाले हैं। बहुत ही सीधा-सादा, साधारण और स्वच्छ जीवन व्यतीत करते हैं और ऐसा ही वह दूसरों के लिए पसन्द करते हैं। चौधरी साहब जाति-पांति का विरोध करते हैं। इस मामले में वह बड़े चिन्तित रहते हैं और उसे दूर करने की कोशिश करते हैं। वह अपने सिद्धान्तों में अटल और इरादों में सुदृढ़ हैं। राष्ट्रीय एकता के मामले में वह बहुत ही पक्का निश्चय रखते हैं।

चौधरी साहब अत्यन्त दयालु हृदय रखते हैं। वह दूसरों के कष्ट को सहन नहीं कर सकते हैं। गरीबों की दशा पर

और किसी को कष्ट में देखकर उनका दिल पसीज जाता है मैने उनकी आँखों को दूसरों की दयापूर्ण हालत पर आँसू बहाते देखा है।

मैं चौधरी साहब के सम्बन्ध में आगे क्या लिखूँ। सच पूछिये तो मेंरे पास शब्द नहीं हैं कि मैं उनकी श्रेष्ठता के बारे में पूरे तौर पर लिख सकूँ। मुझे डा० इकबाल का एक शेर याद आता हैं जो चौधरी साहब के महान् व्यक्तित्व के लिए उचित है।

"हज़ारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा ॥"

आज जब देश नया मोड़ ले रहा है, चौधरी चरणसिंह पर सबकी आँखें लगी हैं, पूरे भरोसे एवं पूरे विश्वास के साथ। मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि चौधरी साहब बहुत जमाने तक जीवित रहें और हमारे देश एवं देशवासियों, खासतौर पर गरीबों की बेलाग-सेवा करते रहें।

●

महाजनस्य संसर्ग : कस्य नोन्नति कारकः।
पद्मपत्रस्थितं वारि धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥

–सुभाषित

महापुरुषों की संगति किसकी उन्नति करने वाली नहीं होती। कमलदल पर स्थित पानी की बूँद मोती की कान्ति को धारण कर लेती है।

●

संकल्पों के धनी

□ डा० इर्तिजा हुसेन

अनेक महान नेताओं ने इस देश में जन्म लिया । इनके विचारों, प्रवृत्तियों और गुणों में परस्पर भिन्नता भी थी किन्तु मातृभूमि की सेवा में सभी ने मूल्यवान योगदान दिया । राजनीति वस्तुतः सैद्धान्तिक दृढ़ता और कार्यसाधकता दोनों के समन्वय से ही सम्भव है तथापि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में इन दोनों का अनुपात भिन्न-भिन्न होता है । जहाँ वैचारिक दृढ़ता और स्पष्टवादिता की चर्चा होती है, चौधरी चरणसिंह का नाम अनायास ही जबान पर आ जाता है । यद्यपि समझा जाता है कि कार्यसाधकता और समझौताशीलता तात्कालिक समस्याओं के समाधान में शायद अधिक सहायक होती है तथापि अन्तिम विजय और दीर्घकालीन समाधान की प्राप्ति सैद्धान्तिक दृढ़ता से ही संभव होती है ।

यह सच है कि सिद्धांतों के प्रति अटूट आस्था और स्पष्टवादिता जहाँ जनता के एक वर्ग से श्रद्धांजलि प्राप्त करती है वहीं एक वर्ग से आलोचना भी अर्जित करती है । क्या हम आज सरदार वल्लभभाई पटेल, राम मनोहर लोहिया, करीम भाई छागला, हमीद दलवई तथा ऐसे ही अनेक नेताओं और विचारकों को इसीलिए याद नहीं करते कि उन्होंने अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहते हुए हजार आलोचनायें सहन कर लीं किन्तु वाहवाही प्राप्त करने के लिए सिद्धांतों के साथ समझौता (जो बहुधा समझौता नहीं समर्पण होता है) गवारा नहीं किया । चौधरी चरणसिंह भी अपने अदम्य संकल्प, सैद्धान्तिक दृढ़ता और स्पष्टवादिता के लिये सदा याद किये जाते रहेंगे । वस्तुतः उनके व्यक्तित्व में विवेक, दृढ़ता, सत्यनिष्ठा और कर्तव्यपरायणता का एक अद्‌भुत संगम देखने को मिलता है और साथ ही एक रचनात्मक कल्पना शक्ति भी, जो अन्याय, अंधविश्वासों और कुप्रथाओं और भ्रष्टाचार से मुक्त एक समाज के नवनिर्माण की प्रेरणा देती है ।

कुछ लोगों के पास न अपना दिशाबोध होता है न संकल्पशक्ति, वे किसी वृक्ष की शाखाओं के समान उसी दिशा में मुड़ जाते हैं जिस दिशा में हवा चल रही हो । वे उस कवि के कथन का अनुसरण करते हैं जिसने कहा है 'चलो तुम उधर को , हवा हो जिधर की ।'

मानव ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ सृष्टि है, उससे निम्न श्रेणी के पशु हैं, तदन्तर वृक्ष हैं और सबसे निम्न श्रेणी में वे कँकर पत्थर हैं जिनमें किसी प्रकार की चेतना नहीं । स्वयं दिशाबोध से रहित होते हुए इस प्रवृत्ति का दर्शन करना कि 'चलो तुम उधर को , हवा हो जिधर की' वस्तुतः पेड़ पौधों का गुण हो सकता है मानव का नहीं । मानव तो उनसे दो श्रेणी श्रेष्ठ है । उसका काम तो स्वयं दिशा प्रदान करना है । चौधरी चरणसिंह उन राष्ट्रीय नेताओं में हैं जो हवा को दिशा देते हैं, उसके झोकों में अनायास बहते नहीं रहते । उनका चिन्तन मौलिक है; उनका बौद्धिक साहस सर्व-विदित है, स्पष्टवादिता उनके विशेष गुणों में से है । यहाँ तक कि जहाँ कहीं सैद्धांतिक प्रश्नों पर उन्हें गाँधी और नेहरू जैसे नेताओं से मतभेद होता है वे उसे तर्कपूर्ण और साहसिक ढंग से व्यक्त करते हैं ।

इसमें सन्देह नही कि गाँधी और नेहरू महान नेता

थे। किन्तु कोई व्यक्ति कितना ही महान क्यों न हो भ्रमातीत नहीं होता । महात्मा गाँधी और श्री नेहरू के विषय में भी यह नहीं कहा जा सकता कि उन्होने हर मामले में सही दृष्टिकोण अपनाया। दोनों उदारता और सहिष्णुता के अग्रदूत माने जाते हैं किन्तु अनेक अवसरों पर उनकी उदारता ने प्रतिक्रियावाद और संकीर्ण पृथकतावादी साम्प्रदायिकता के प्रति तुष्टीकरण का रूप धारण कर लिया। इसके अतिरिक्त आर्थिक और राजनीतिक प्रश्नों पर भी इनकी सब नीतियों को पूर्णरूप से निर्भ्रान्त नहीं समझा जा सकता। अनेक अवसरों पर तो स्वयं उन्होंने अपनी त्रुटियों को स्वीकार किया है। चौधरी चरणसिंह महापुरुषों का सम्मान करते हैं किन्तु अंधानुकरण नहीं। वे बड़े से बड़े नेता की त्रुटियों को इंगित करने में नही चूकते, जहाँ कहीं वे अनुभव करते हैं कि इससे राष्ट्रीय हितों को क्षति पहुँची है। इसलिये नहीं कि यह आप में कोई उद्देश्य है बल्कि इसलिए कि राष्ट्र के भावी दिशानिर्देशन में उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति न होने पाये और उनके दुष्परिणामों से राष्ट्र की रक्षा की जा सके।

यथार्थ में प्रत्येक नेता के अपने असाधारण गुण और क्षमतायें होती हैं और साथ ही अपनी-अपनी न्यूनतायें भी। उदाहरण स्वरूप स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरांत देशी रियासतों और रजवाड़ों के विलय के द्वारा इस क्षत विक्षत राष्ट्र के एकीकरण का जो ऐतिहासिक कार्य सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया था, वह श्री नेहरू के बस के बाहर था। वस्तुतः सौ नेहरू मिलकर भी यह कार्य नहीं कर सकते थे जो एक पटेल ने किया। इसलिए जब हम एक नेता के गुणों का बखान करते हैं तो दूसरे नेताओं को नहीं भूल जाना चाहिए । इससे व्यक्तिपूजा की प्रवृत्ति पनपती है जो राष्ट्र के लिए अनिष्टकारी और आत्मघातक सिद्ध हो सकती है । चौधरी चरणसिंह उन राष्ट्रीय नेताओं में हैं जिन्होंने राष्ट्र को व्यक्ति से ऊपर मानकर व्यक्तिपूजा की प्रवृत्ति का विरोध किया है।

उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री के रूप में उन्होंने जैसी साहसिक नीतियों को क्रियान्वित करने के अभूतपूर्व प्रयास किये, वे अविस्मरणीय हैं। इतना ही नहीं संपूर्ण राष्ट्रीय जीवन को एक नया रूप प्रदान करने तथा भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता से मुक्त एक नये समाज का सृजन करने के लिये उन्होंने जैसे साहसिक और क्रान्तिकारी विचार रखे, वे सदा प्रेरणाजनक रहेंगे। किसी ऐसे देश में जो भ्रष्टाचार में सिर से पैर तक डूबा हुआ हो भ्रष्टाचार के विरुद्ध जिहाद छेड़ने का संकल्प उनकी प्रशासनिक विशेषताओं में से एक है। अब राष्ट्र को केन्द्रीय नेता के रूप में उनसे जातिप्रथा, दहेज, सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार के निवारण के निमित्त साहसिक पग उठाने की आशा है। वस्तुतः राष्ट्र का वास्तविक संकट तो नैतिक ही है। अन्य सब संकट– राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक–तो मुख्यतया उसके परिणाम मात्र हैं। उनमें सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रबल भावना भी है, प्रशासनिक क्षमता भी और नैतिक साहस भी। प्रश्न उन अनेकानेक कठिनाइयों और जटिल परिस्थितियों का है जिनमें सत्ता की बागडोर संभालने का अवसर मिला है।

सांप्रदायिकता के प्रश्न पर भी उनका दृष्टिकोण स्पष्ट और बेलाग है। दुःख इसका है कि हमारे अल्पसंख्यक संप्रदाय में लोग क्षणिक तुष्टीकरण को अपने दीर्घकालीन हितों की अपेक्षा अधिक महत्त्व देते हैं। राष्ट्रीयधारा में समाहित होने के बजाय वे अपने पृथक सांप्रदायिक हितों के लिए प्रलाप करते हैं। योग्यता और पात्रता अर्जित करने और परिश्रम का मार्ग अपनाने के बजाय वे सरकार से विशेष रियायतों की भीख मांगते हैं। राष्ट्रभाषा हिंदी को पूर्ण रूप से स्वीकार करने के बजाय वे उर्दू का प्रतिक्रियावादी नारा लगाते हैं। परिश्रम व पुरुषार्थ को अपने पुनरुत्थान का साधन बनाने के बजाय वे अकर्मण्यता और भिक्षावृत्ति को अपने जीवन का आधार बनाना चाहते हैं। वास्तविकता से आंखें चार करने के बजाय वे कल्पनाओं में खोये रहना चाहते हैं । चौधरी चरणसिंह मुँहदेखी बातें करने के अभ्यस्त नहीं हैं। एक दयानतदार और प्रामाणिक नेता के रूप में वे इसे अपना कर्तव्य समझते हैं कि अल्पसंख्यकों को धोखे में न रखें तथा उन्हें राष्ट्रीय धारा में समाहित होने और अपने पृथकतावादी सांप्रदायिक आत्मघाती दृष्टिकोणों से मुक्ति पाने का सद्परामर्श देते रहें। दुःख इस बात का है कि अल्पसंख्यकों का एक वर्ग स्वयं अपने को धोखे में रखना ही अपने लिए अधिक श्रेयस्कर समझता है। आत्म-प्रवंचना में ही वह आत्म-संतोष अनुभव

करता है । चौधरी चरणसिंह जैसे किसी प्रामाणिक, दयानतदार और खरे नेता द्वारा भ्रमनिवारण उन्हें अखरता है । यह दुर्भाग्य की बात है कि जो नेता उन्हें अफीम खिला खिला कर गफलत में रखना चाहते हैं, उनसे वे अधिक सन्तुष्ट रहते हैं उन नेताओं की अपेक्षा जो उनका मोह भंग करके उन्हें वास्तविकता के निकट लाने और दीर्घकालीन हितों के प्रति जागरूक होने की प्रेरणा देते हैं ।

केवल मुसलमान ही नहीं हिन्दुओं का भी एक वर्ग उनकी स्पष्टवादिता से खिन्न है । यही हमारा दुर्भाग्य है । जब तक हम अपने सच्चे और खरे नेताओं का मान करना न सीखेंगे, हम अपने देश से न भ्रष्टाचार समाप्त कर सकेंगे और न ही अपने नैतिक संकट से मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे । यह जनता का कर्तव्य है कि वह अपने किसी नेता को केवल इसलिए अस्वीकार न कर दे कि वह मुँह देखी कहने को तैयार नहीं । नैतिक संकट से ग्रस्त इस देश में बहुत थोड़े लोग हैं जो स्पष्टवादिता और सत्य निष्ठा का दीपक जलाये हुए हैं । अब देश का भविष्य इस पर निर्भर करेगा कि हम उन्हें लोकप्रियता प्रदान करते हैं अथवा उनका तिरस्कार कर देते हैं । चौधरी चरणसिंह जैसे स्पष्टवादी, दयानतदार और प्रामाणिक नेताओं को वरीयता देते हैं अथवा उन लोगों को, जो क्षणिक तुष्टीकरण के द्वारा दीर्घकालीन हितों पर कुठाराघात करते हैं ।

हमें राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं को कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करना चाहिए और आशा करना चाहिये कि उनका प्रखर व्यक्तित्व, उनका राजनीतिक विवेक, उनका प्रखर साहस, उनके मौलिक विचार और उनका क्रांतिकारी संकल्प दीर्घकाल तक राष्ट्र को सही दिशा की ओर प्रेरणा प्रदान करता रहेगा ।

●

मोक्ष जीवात्मा द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार है । वह किसी दूसरे लोक अथवा स्थान में पहुँचना नहीं है । ज्ञान से मन के प्रकाशित हो जाने पर, कि जीवात्मा और अन्तर्निवासी परमात्मा दोनों एक ही हैं, छाया, प्रकाश में विलीन हो जाती है । यही मोक्ष है ।

—सन्त वचन

●

युग-प्रवर्तक

□ श्री राजेन्द्र सिंह
कृषि मन्त्री, उत्तर प्रदेश

सच्चरित्र, ईमानदार, नेकदिल, कर्मठ व्यक्ति के नाम से यदि किसी की तस्वीर उभर कर आती है तो वह हैं चौधरी चरणसिंह । सहजता, सज्जनता, सहृदयता तथा सरलता के साक्षात प्रतीक चौधरी चरणसिंह कदाचित् देश के अकेले ऐसे नेता हैं जिन्हें भारतीय जन-जीवन की वास्तविक जानकारी है। एक मामूली कृषक परिवार में जन्मे चौधरी चरणसिंह आज देश के गृहमन्त्री पद पर पहुंच गये हैं। इन सब सोपानों को पार करने में उनके साथ उनका दृढ़ निश्चय, निःस्वार्थ जन-सेवाव्रत और आत्मविश्वास था।

प्रथमश्रेणी के राजनीतिज्ञ व कुशल प्रशासक के रूप में उनकी ख्याति कभी भी धूमिल नहीं होने पायी। यदि यह कहा जाय कि उन्होंने कभी भी सिद्धान्तों के बदले में सौदेबाजी नहीं की और अपने भरोसे देश-प्रदेश की समस्याओं से जूझते व उन्हें हल करते रहे, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी।

पद-लोलुप राजनीति से हमेशा अछूते रहने वाले चौधरी चरणसिंह ने जिन मूल्यों और आदर्शों की स्थापना की वे किसी भी उदीयमान नेतृत्व के लिए मार्ग-दर्शन का कार्य करेंगे।

किसान पुत्र के नाते चौधरी चरणसिंह का अपने देश के किसानों के लिए चिन्तित रहना अस्वाभाविक नहीं। सदियों से किसानों की शोषक जमींदारी प्रथा का अंत करने में चौधरी साहब का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

अपने जीवन का अधिकांश भाग महात्मागाँधी के प्रेरणास्पद नेतृत्व की छत्रछाया में बिताने वाले चौधरी चरणसिंह ने जब देखा कि कांग्रेसदल अपने घोषित लक्ष्य से परे हो रहा है, तो उन्होंने पद से चिपके न रहकर उसे और दल को त्याग दिया। उनके इस साहस की सर्वत्र सराहना की गयी और वे किसानों गरीबों और दलितों के स्नेहभाजन बन गये। उस समय की राजनीतिक स्थिति में चौधरी चरणसिंह का यह कदम अत्यन्त निर्भीक कदम था और उनका राजनीतिक जीवन विघटित भी हो सकता था लेकिन उनकी कर्मठता, आत्मविश्वास, संगठनशक्ति तथा उद्देश्य की निष्कपटता ने प्रदेश ही नहीं देश के राजनीतिक वातावरण को हिला दिया और वे शासक दल के विरुद्ध एक दुर्धर्ष योद्धा की भूमिका निभाने के लिए कटिबद्ध हो गये।

चौधरी साहब का सदैव यही मत रहा है कि गाँवों के विकास पर ही देश का विकास और समृद्धि सम्भव है। इसीलिये वे खाद्योत्पादन में वृद्धि करने के लिए कृषक वर्ग को सभी सम्भव सहायता यथा समय उपलब्ध कराने के पक्षधर रहे हैं। वे यद्यपि बड़े उद्योगों को समाप्त करने का समर्थन नहीं करते तथापि उनका निश्चित मत है कि ग्रामीण क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था सुधारने के लिए लघु तथा कुटीर उद्योगों को स्थापित करने की आवश्यकता इसलिये है कि उससे किसानों को लाभकारी रोजगार मिल सके।

चौधरी चरणसिंह की सादगी हमारी पुरातन संस्कृति से मेल खाती है। दम्भ से दूर, मात्र जन-सेवा के लिए

समर्पित एक निष्कलुष व्यक्तित्व को अनेकानेक झंझावातों, आरोपों, विरोधों से भी गुजरना पड़ा है और वे प्रत्येक परीक्षा की घड़ी में खरे उतरे हैं ।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति के तीस वर्ष पश्चात् देश में जो एक शान्तिपूर्ण क्रान्ति जनता ने लाकर दिखा दी है वह इस बात का परिचायक है कि भारतीय जनमानस उद्वेलित हो गया था और लोकतन्त्रीय पद्धति पर कुठाराघात करने वाली किसी भी शक्ति को मुँहतोड़ उत्तर देने को तत्पर था । इस जन-असन्तोष को स्वरूप और वाणी देना उन कतिपय परिपक्व मस्तिष्कों की उपज है जिन्होंने जनता पार्टी गठित की और जन को जन के रूप में देखा तथा स्वयं को जन-सेवक के रूप में प्रस्तुत किया। कारागार के सीखचों में २० महीनों की यातना सहने के पश्चात् जिन लोगों ने देश को, समाज को, व्यक्ति को एक नई दिशा देने का संकल्प लिया उनमें चौधरी चरणसिंह अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं। नयी सरकार के गृहमन्त्री के रूप में उनके ऊपर आन्तरिक शान्ति-व्यवस्था और सुरक्षा का गुरुतर उत्तरदायित्व है। अभी तक जिस प्रकार उन्होंने हर दायित्व को निभाने में कभी भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई वही उनकी प्रवृत्ति और प्रकृति रहेगी। आपात्कालीन गन्दगी को दूर करके जनता को एक स्वच्छ, कुशल व सम्वेदनशील प्रशासन देने के लिए गृहमन्त्री ने जो व्रत लिया है उसे सफल बनाने में भारत के प्रत्येक देशभक्त नागरिक का सहयोग अपेक्षित है ।

आइये हम सब विलक्षण प्रतिभा व बुद्धि के धनी चौधरी चरणसिंह के दीर्घजीवी होने की प्रार्थना करें ।

●

मत्स्याः यथान्तःसलिलं चरन्तो
ज्ञातुं न शक्याः सलिलं पिबन्तः ।
युक्तास्तथा कार्यविधौ नियुक्ताः
ज्ञातुं न शक्याः धनमाददानाः ॥

– चाणक्य

जिस प्रकार पानी में प्रविष्ट मछली पानी पीती दिखाई नहीं देती, इसी तरह छोटे-छोटे अध्यक्ष, अपने-अपने कार्य पर नियुक्त हुए, राज्य के धन का अपहरण करते हुए जाने नहीं जा सकते।

आत्म-विश्वास के प्रतीक

□ अवधेश प्रसाद

राज्य मन्त्री, उ. प्र. सरकार

भारत के गृह मन्त्री श्री चौधरी चरणसिंह का स्थान सरदार पटेल और पं० गोविन्दवल्लभ पन्त की पंक्ति में आता है। वर्तमान राजनीति - क्षेत्र में आज वे देश के सर्व-श्रेष्ठ बहुचर्चित व्यक्ति हैं, जिनका प्रभाव उच्च वर्ग से लेकर निम्न वर्ग के व्यक्तियों पर स्पष्ट रूप से पड़ा हुआ दीख पड़ता है, चाहे वह उद्योगपति हो या रिक्शा या ठेला चालक या साधारण व्यक्ति। सहज ही प्रश्न उठता है कि ऐसी कौन सी बात है श्री चरणसिंह जी के व्यक्तित्व में, कि उनका प्रभाव हर व्यक्ति पर पड़ जाता है? उत्तर है, श्री चरणसिंह का उच्चादर्श, दृढ़ता और ईमानदारी। सम्भवतः आज के भारत के लिए इन तीन चीजों की विशेष रूप से जरूरत है क्योंकि देश का विकास, उसकी उन्नति और गाँधी जी के सपनों का भारत बनाने के लिए इन्हीं गुणों से सम्पन्न व्यक्तियों की नितान्त आवश्यकता है। भारत के वर्तमान गृहमन्त्री चौधरी चरणसिंह जो चौधरी साहब के नाम से जाने जाते हैं, उच्चादर्शों के प्रतीक हैं।

चौधरी साहब दृढ़ सिद्धान्तवादी और अनुशासनप्रिय व्यक्ति हैं एवं धुन के पक्के हैं। वे एक बार जिस बात का निर्णय कर लेते हैं, अन्त तक उसी पर दृढ़ रहते हैं। चाहे उनकी इस दृढ़ता की कुछ लोग भले ही आलोचना क्यों न करते हों, किन्तु चौधरी साहब इसकी चिन्ता नहीं करते। वे आगे ही बढ़ते रहते हैं। उनकी यही दृढ़ता, सिद्धांतके प्रति निष्ठा और अपने कर्तव्य के प्रति अटल विश्वास उनके लौह-पुरुष होने का संकेत करता है। निःसन्देह वे भारत के लौहपुरुष हैं। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में उनका द्वितीय स्थान है।

चौधरी साहब का जन्म मेरठ जिले के नूरपुर नामक स्थान में एक मध्यम श्रेणी के किसान परिवार में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से एम० ए० की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने कानून का अध्ययन किया और फिर वकालत शुरू की। महात्मा गांधी के आह्वान पर उन्होंने वकालत त्याग दी और सन् १९२९ में कांग्रेस में सम्मिलित हुये।

स्वतन्त्रता के संघर्ष में अपना सब कुछ उन्होंने न्योछावर कर दिया और अनेक बार जेल गए। उत्तर प्रदेश विधान सभा के लिये वे पहली बार सन् १९३७ में छपरौली से चुने गये। सन् १९४६ में पं० गोविन्द वल्लभ पन्त के मन्त्रिमण्डल में वे पन्त जी के संसदीय सचिव बनाये गये। तब से लेकर अब तक चौधरी साहब राष्ट्रीय सन्दर्भ में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाते चले आ रहे हैं।

चौधरी साहब की दूरदर्शिता और मौलिक चिन्तन का ही यह फल था कि देश में सबसे पहले जमींदारी उन्मूलन का कानून उत्तर प्रदेश में ही बना और लागू किया गया और ऐश्वर्य एवं भोग-विलास में डूबे सैकड़ों-हजारों जमींदार मुंह ताकते रह गये। सामन्तवादी शोषण की घृणित प्रथा, जमींदारी का उन्मूलन एक ही झटके में हो गया। जातों की चकबन्दी हुई, उनकी परिकल्पना किसानों को छोटी-छोटी अलाभकारी जोतों के अभिशाप से मुक्ति दिलाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम था। उत्तर प्रदेश में भूमि सुधार का समस्त श्रेय चौधरी साहब को है।